वट वृक्ष –6

उत्तर पुस्तिका

Harbour Press®
INTERNATIONAL

1 वर्षा समीर

(अभ्यास-उत्तर)

काव्य-बोध

Page-9 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. बरसात की हवा मौसम को साफ़ करती हुई, चंद्रमा के पास से तथा बादलों के बीच से होते हुए आगे बढ़ती है। उस समय वह इठलाती, मदमाती हुई सभी को झकझोर देती है। वह पर्वतों के शिखर को स्पर्श करते हुए खुशी के साथ आगे बढ़ती जाती है।
2. बरसात की हवा पर्वतों की ढालों से खेलती है। वह लहराती हुई आती है। वृक्षों की पंक्तियों से खेलती हुई वह अठखेलियाँ करती तथा इठलाती हुई आती है। वह लोगों के भीतर आनंद को बढ़ाती है और सभी के अंग से लिपटकर आगे बढ़ जाती है।
3. विद्यार्थी स्वयं करें।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. बरसात की हवा ढाल, ऊँचे-ऊँचे शिखरों की चोटियों, आकाश-पाताल, वृक्षों की पंक्तियों तथा वृक्षों की हर डाल व लताओं से खेलती हुई सभी को खुशी प्रदान करती है। उसके आने से सभी जीव जंतु, बच्चे आनंदित हो जाते हैं तथा उन्हें अनुभव होता है कि शीतल वायु बहने से वर्षा होने वाली है।

2. बरसात की हवा के लिए कवि ने इन विशेषणों का प्रयोग किया है– मदमाती, झकझोरती, लहराती, अठखेलती, इठलाती तथा सरसाती, झपटती, लिपटती आदि।

3. उक्त पद्यांश में कवि यह बताना चाहता है कि बरसात की आती हवा ढालों, ऊँचे शिखरों के मस्तक अर्थात पहाड़ों की चोटियों को छूती हुई आकाश-पाताल आदि से आती हुई अंतर्मन को झकझोर देती है। वह पेड़ पौधो को झकझोर देती है। बच्चे बरसाती हवा के आने से खुश हो जाते हैं। वे झूला झूलते हैं। बरसाती हवा सबके मन को खुशी प्रदान करती है।

Page-9-10

ख. 1. द   2. द
3. ब   4. द

Page-10 (श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. म् + अं + द् + अ
2. ब् + आ + द् + अ + ल् + अ
3. झ् + अ + क् + अ + झ् + ओ + र् + अ
4. च् + अं + द् + र् + अ + म् + आ

ख. 1. मेघ, घन   2. नभ, आसमान
3. वायु, पवन   4. शशि, चाँद

Page-11

ग.	1.	गण + ईश	2.	जगत् + ईश
	3.	निः + आशा	4.	सत् + जन
	5.	परि + नाम	6.	मत + अनुसार
घ.	1.	पास–वास	2.	भाल–पाताल
	3.	लहराती–आती	4.	डाल–जाल
	5.	प्रकट–झकट		

Page-11 (कौशल-परीक्षण)

1. वर्षा ऋतु एक ऐसी ऋतु है, जो लगभग सभी लोगों की पसंदीदा होती है, क्योंकि झुलसा देने वाली गरमी के बाद यह राहत का अहसास लेकर आती है। इस ऋतु का आनंद मैं चाय-पकौड़े तथा विभिन्न प्रकार के पकवान खाकर लेता/लेती हूँ। साथ ही बारिश में भीगना मुझे बहुत आनंददायक लगता है। अपने मित्रों के साथ मैं इस मौसम का खूब आनंद लेती/लेता हूँ। किंतु इस ऋतु में हमें कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है। इस मौसम में संक्रामक बीमारियाँ फैलने का डर रहता है, इसलिए हमें बाहर का तला-भुना न खाकर घर में बना भोजन ही करना चाहिए। बारिश के कारण जीवन अस्त-व्यस्त तथा सभी स्थान कीचड़युक्त हो जाते हैं। इसलिए जब अधिक ज़रूरी हो हमें तभी घर से बाहर निकलना चाहिए। अपने आस-पास वर्षा के जल को जमा नहीं होने देना चाहिए क्योंकि इस मौसम में डेंगू का खतरा भी काफी बढ़ जाता है।

2. वर्षा हमें यह सिखाती है कि हमें प्रकृति का भरपूर आनंद लेना चाहिए। हमें सदैव मस्त रहना चाहिए ताकि हम किसी भी प्रकार के तनाव से दूर रह सकें। जीवन को बोझ की तरह से न जीते हुए उसमें कुछ रोमांच होना चाहिए। हमें अपने तथा अन्य लोगों के जीवन को आनंदमय बनाना चाहिए। यह सीख भी वर्षा से ही प्राप्त होती है।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. यदि वर्षा न होती तो इस प्रकृति में कुछ भी संभव नहीं हो पाता। यदि हम ध्यान दें तो वर्षा के कारण ही किसानों की फसलें उग पाती हैं और तभी हम भोजन के लिए आवश्यक सामग्री जुटा पाते हैं। वर्षा के कारण ही पेड़-पौधे विकसित हो पाते हैं तथा यही पेड़-पौधे जीव-जंतुओं का भोजन होते हैं। पेड़-पौधे न होने पर हमें ऑक्सीजन न मिल पाती। अतः पृथ्वी पर जीवनयापन संभव न होता।

   इसलिए वर्षा का होना अनिवार्य है। वर्तमान युग में तरह-तरह के प्रदूषणों के चलते हमारी प्रकृति का चक्र प्रभावित हुआ है, जिससे भारत के कई राज्य वर्षा न होने अथवा वर्षा अधिक होने के कारण समस्याओं से जूझ रहे हैं। इसके लिए लोगों को अपनी ओर से यह प्रयास करते रहना चाहिए कि वे जल को व्यर्थ ही बर्बाद न करें तथा प्रकृति के साथ छेड़छाड़ न करें।

3. विद्यार्थी स्वयं करें।

2 सोना

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-20 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. लेखिका ने हिरन न पालने का निश्चय इसलिए किया था क्योंकि इन कोमलप्राण जीवों की रक्षा संभव नहीं है। उसकी देखभाल के लिए पर्याप्त समय एवं धन की आवश्यकता थी। वह भ्रमण के लिए उन्हें

छोड़कर बाहर नहीं जा सकती थी।

2. लेखिका के परिचित स्वर्गीय धीरेंद्रनाथ बसु की पौत्री सुस्मिता ने जब लेखिका से उसे गत वर्ष अपने पड़ोसी से मिले हिरन को स्वीकार करने का निवेदन किया, तब लेखिका को अचानक सोना की स्मृति हो आई। उसे सोना के साथ बिताए हुए दिन याद आने लगे और सोना का चित्र उसकी आँखों के समक्ष आ जाता है।

3. सोना दिन की शुरुआत दूध पीकर और भीगे चने खाकर करती थी। उसके बाद कुछ देर कंपाउंड में चारों पैरों को संतुलित कर चौकड़ी भरती रहती। फिर वह छात्रावास पहुँचती और प्रत्येक कमरे के भीतर, बाहर निरीक्षण करती। छात्रवास का जागरण और जलपान अध्याय समाप्त होने पर वह घास के मैदान में कभी दूब चरती और कभी उसपर लोटती रहती। वह फ्लोरा के बच्चों की देखभाल उस समय भी करती थी जब फ्लोरा कहीं घूमने गई होती थी, फ्लोरा के बच्चे जब भी चीं-चीं करते हुए सोना के उदर में दूध खोजते थे, तब सोना उन बच्चों शांत करने के लिए रोज पिल्लों के बीच लेट जाती थी। फ्लोरा के बच्चे बड़े होने पर सोना के पीछे-पीछे घूमते थे।

Page-20-21 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. **1.** महादेवी वर्मा को सोना हिरन उनके परिचित स्वर्गीय डॉक्टर धीरेंद्रनाथ बसु की पौत्री सुस्मिता ने दिया था। वह सुस्मिता के आग्रह को टाल न सकी और हिरन न पालने के नियम को भंग कर दिया। सोना इतनी छोटी थी कि शीशी का निप्पल उसके मुख में समाता नहीं था। उसे दूध पीने में कठिनाई होती थी। जब वह बड़ी हुई तो दूध की बोतल पहचानने लगी। भक्तिन को बोतल साफ़ करते देखकर वह दौड़कर उसके पास जाती और आँगन में कूदने-फाँदने लगती। सोना रात के समय लेखिका के पलंग के पाए से सटकर बैठ जाती थी और अँधेरा होने पर कमरे से बाहर निकल जाती थी। सुनहरे रंग के रेशमी लच्छों की गाँठ के समान उसका कोमल लघु शरीर था। छोटा-सा मुँह और बड़ी-बड़ी पानीदार आँखें थीं, जिन्हें देखकर लगता था कि अभी छलक पड़ेंगी। चंपक-वर्णा रूपसी के उपयुक्त सोना, सुवर्णा, सुवर्णलेखा आदि नाम उसका परिचय बन गए।

2. लेखिका के घर में बिल्ली (गोधूली), कुत्ते (हेमंत-वसंत) और कुतिया (फ्लोरा) आदि तरह-तरह के पशु-पक्षी थे। उन्होंने अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए चिड़िया घर के समान शेर, चीता, साँप को छोड़कर सभी जीवों को अपने घर में स्थान दिया। उन जीवों की देखभाल के लिए सहायक भी नियुक्त किया गया तथा खुले स्थान की व्यवस्था भी की गई।

3. फ्लोरा, सोना के संरक्षण में अपने बच्चों को छोड़कर आश्वस्त रहती थी, क्योंकि उसे सोना से किसी भी तरह का खतरा नहीं था। वह सोना की स्नेही और अहिंसक प्रवृत्ति से परिचित हो गई थी। उसे मालूम था कि उसकी गैरहाज़िरी में सोना बच्चों की देख-भाल करती है, बच्चों को रोने नहीं देती।

4. लेखिका यात्रा पर फ्लोरा को अपने साथ ले गई थी, क्योंकि फ्लोरा लेखिका के बिना नहीं रह सकती थी। लेखिका के घर के अन्य पालतू जीव किसी के साथ भी रह जाते थे। उन्हें सिर्फ़ वक्त पर खाना-पीना चाहिए था।

5. छात्रावास के सन्नाटे और फ्लोरा तथा लेखिका के अभाव के कारण सोना प्राय: कंपाउंड से बाहर निकल जाती थी। कहीं कोई इतनी बड़ी हिरनी को पकड़ न ले, इसी आशंका में माली ने उसे एक लंबी रस्सी से बाँधना आरंभ कर दिया। एक दिन न जाने किस स्तब्धता की स्थिति में, बंधन की सीमा भूलकर वह बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुख के बल धरती पर आ गिरी। वही उसकी अंतिम साँस और अंतिम उछाल थी। सबने उस सुनहले रेशम की गठरी-से शरीर को गंगा में प्रवाहित कर दिया।

ख. 1. द 2. अ
3. स 4. अ

ग. 1. सोना हिरनी काफ़ी बड़ी हो चुकी थी और लेखिका के अलावा उसे पालने वाला आसानी से नहीं मिल सकता था, क्योंकि उसे पालने में काफ़ी पैसे खर्च करने पड़ते। इसके विपरीत उसे पकाकर स्वाद लेकर खाने वाले बहुत मिल सकते थे।

2. किसी अज्ञात वन में जन्मी और इनसानों व कुछ पशुओं के बीच पली-बढ़ी हिरनी सोना को मरने के बाद गंगा नदी में प्रवाहित कर दिया गया। इस प्रकार सोना की जीवनलीला का अंत हुआ।

घ. 1. वे लोग माली, चपरासी, चौकीदार थे।
2. लेखिका बद्रीनाथ से लौटी थीं।
3. दुखद समाचार सोना की मौत था।
4. माली की भावुकता आँखें पोंछने से व्यक्त हुई।

Page-22 (श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-22

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. यौगिक 2. रूढ़
3. योगरूढ़ 4. योगरूढ़
5. रूढ़ 6. यौगिक
7. योगरूढ़ 8. यौगिक

ख. 1. जन्म से अंधा
2. समय के अनुसार
3. हाथ से लिखा हुआ
4. लंबा है उदर जिसका-गणेश
5. कमल जैसे नयन
6. रात ही रात में
7. चार राहों का समूह
8. नमक और मिर्च

ग. 1. आनंद देने वाली वस्तुएँ वेदना का कारण भी बन सकती हैं।
2. असंचित ज्ञान को हम कभी भी संचित कर सकते हैं।
3. सत्संग में बैठने से जो ज्ञान मिलता है, वह कुसंग में बैठने से नहीं मिलता है।

Page-23

4. मानसिक विकारों को दूर करने के लिए पुस्तकें उपयुक्त औषध हैं; अनुपयुक्त वस्तु नहीं।
5. प्रारंभ से जो व्यक्ति सदाचारी होता है, वह कभी भी दुराचारी नहीं होता है।

घ. **जातिवाचक संज्ञा शब्द** – हिरन, पड़ोसी, बिल्ली, कुतिया, कुत्ता

भाववाचक संज्ञा शब्द – स्मृति, स्नेह, अनुभव, आभार, क्रोध

ङ. 1. उपकार – उपहार

2. दुर्जन – दुर्गम

3. परिचय – परिजन

4. अनजान – अनपढ़

5. कुपात्र – कुपुत्र

6. लावारिस – लापरवाह

7. अधपका – अधखिला

8. अपराध – अपहरण

(कौशल-परीक्षण)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-24 (विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. अध्यापक छात्रों से स्वयं करने को कहें।
2. हमें जानवर पालना अच्छा नहीं लगता, क्योंकि इससे जानवरों की स्वंतत्रता का हनन होता है। इससे वह एक स्वतंत्र जीवन व्यतीत नहीं कर सकते। जिस तरह हर मनुष्य को स्वंतत्रता का जीवन व्यतीत करने का हक है, उसी तरह जानवरों को भी स्वतंत्रता का हक है। हम जानवरों को पालते भी हैं और उनकी देखभाल भी करते हैं, लेकिन हम उन्हें एक स्वंतत्र जीवन नहीं दे पाते। इसलिए हमें पशुओं को बंदी नहीं बनाना चाहिए। वे स्वतंत्र रहकर ही अपनी ज़िंदगी को अच्छी तरह से जी सकते हैं। वे भी आज़ादी की साँस लेकर जहाँ चाहे जा सकते हैं।

3 मानवीय अस्तित्व और प्रकृति

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-29 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. लेखक अपने आलोचकों को जवाब देते हैं कि वास्तव में इन पेड़-पौधों एवं पशु-पक्षियों की तरह ही मैं भी एक प्राणी हूँ। भूल से आप जैसे सयाने लोगों की दुनिया में आ गया हूँ, इसलिए कभी-कभी जंगली वातावरण के लिए, प्राकृतिक परिस्थिति के लिए तरसता हूँ और जब यह तूफ़ान असहनीय हो जाता है, तब मैं वहाँ हो आता हूँ। वे कहते हैं कि मानव प्रकृति की संतान है, लेकिन शहरी जीवन और कृत्रिम दुनिया खड़ी करके हम प्रकृति से बिछुड़ गए हैं। शहर में कृत्रिम बगीचा बनाकर तथा उसमें दो-चार पेड़-पौधे लगाकर हम सोचते हैं कि हमने प्रकृति के साथ मेल कर लिया है। लेकिन वास्तव में यह सत्य नहीं है। जब हम प्रकृति के बीच में बालक जैसे प्रतीत होते हैं, तभी हम यह कह सकते हैं कि हमने प्रकृति से संपर्क साध लिया है।
2. लेखक प्रकृति-प्रेमी है और जब वह प्रकृति से सामंजस्य स्थापित करता है तो उसे अपना जीवन सार्थक लगने लगता है। वह किसी पहाड़ की चोटी पर खड़ा होकर असंख्य शिखरों के अनेक रूप तथा नीचे समतल मैदान पर सुदूर विस्तार तथा उसमें दो-तीन नदियों के मोड़ की चमकती रेखाएँ देखता है, तो उसके मन में सहसा विचार आता है कि वह एक विशाल संसार का निवासी है। उसे अनुभव होता है कि पेड़-पौधे एवं उनके पत्ते उससे बातें करते है और विश्वासपूर्वक अपने सुख-दुख की गाथाएँ प्रस्तुत करते हैं। वह पशु-पक्षी में आत्मीयता का भाव पाता है। इस प्रकार लेखक के मन में प्रकृति के लिए कृतार्थता की भावना उत्पन्न होती है।
3. देहरादून के पास गुच्छूपानी और सहस्त्र धारा देखने वाले क्षण लेखक को भुलाए नहीं

भूलते क्योंकि लेखक को हज़ारों वर्षों का उनका चरित्र समझने में मुश्किल नहीं होती और वहाँ के अनेक चिंदीवाले पत्थरों को हाथ में लेते ही भूगर्भ-विद्या की सहायता से उनकी जन्मकथा के साथ आनंदित होता है, पाँच-सात हज़ार फुट की ऊँचाई पर मसूरी जाने पर लेखक को लगता है कि बादल ही मेरे समकक्षी हैं। पक्षी को एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ तक विचरण करते देखकर उसे लगता है कि मैं पक्षी होकर नहीं, बादल होकर इन पर्वत शिखरों के बीच में आकाश विहार जरूर करूँ।

Page-30 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. ✗ 2. ✓
3. ✓ 4. ✗
5. ✗

ख. 1. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अर्थात वह जन्म लेते ही स्वयं को एक विशेष आवरण में घिरा महसूस करता है। उसके चारों ओर जो कुछ भी मौजूद होता है, वह उसका सेवन करता है और यही वातावरण कहलाता है जो प्रकृति के सान्निध्य से बनता है। किताब में हिमालय पर्वत क्षेत्र में रहने वाले नाटे कद के मनुष्यों और उनके दैनिक जीवन में आने वाली सभी समस्याओं को करीब से देखा होगा।

2. पशु-पक्षियों के लिए मानव जाति का अनुभव इसलिए कड़वा है, क्योंकि अपने स्वार्थ के लिए मानव समय-समय पर इनका शिकार करता रहा है इसलिए जीव-जंतुओं को उनमें आत्मीयता नहीं अपितु आदमीयत दिखाई पड़ती है। वह मानव प्रकृति के साथ अपने संबंधों को भूलने लगा है। उसने अपने शहरी जीवन में कृत्रिम की दुनिया खड़ी कर दी है। वह कृत्रिम घास बिछाकर, कृत्रिम बगीचा लगाकर प्रकृति के साथ मेल करना चाहता है। दो-चार पौधे लगाने से वह प्रकृति की बराबरी करना चाहता है जो कि संभव नहीं है। प्रकृति से छेड़छाड़ करके वह भविष्य को असुरक्षित कर रहा है तथा आने वाली पीढ़ी के लिए अनेक समस्याएँ उत्पन्न कर रहा है।

3. बादल जिस प्रकार सभी दिशाओं में पहुँचकर अपना आकार, स्वरूप तथा गठन परिवर्तित करते रहते हैं, उसी प्रकार ये मानव को परिवर्तन का संदेश देते हैं कि परिवर्तन ही जीवन का नियम है। हमें समाज के साथ चलना चाहिए न कि पुराने ढर्रे को अपनाए रखना चाहिए।

ग. **1.** लोगों ने काका साहब की आलोचना करते हुए कहा कि काका साहब जैसे व्यवहारकुशल, गंभीर पुरुष, विचारक और नेता अफ्रीका के जंगलों में वहाँ के जानवरों को देखने के लिए घूमे होंगे? अपनी जान तो उन्होंने जोखिम में डाली ही होगी, ज़िंदगी के कीमती क्षण भी इसी तरह बरबाद किए होंगे। इतना ही नहीं इस धुन का व्यवस्थित वर्णन करते हुए वह किताब भी लिखते हैं।

इससे उनकी इस मानसिकता का पता चलता है कि वे अपने दैनिक जीवन में ही इतने व्यस्त रहते हैं कि प्रकृति की सुंदरता का आस्वाद नहीं ले पाते। प्रकृति प्रेमी या प्रकृति के प्रति प्रेम ऐसे लोगों के लिए समय नष्ट करने वाली बात ही है।

2. बढ़ते शहरीकरण, स्वकेंद्रित होने की भावना, व्यक्ति के भीतर बढ़ती स्वार्थपरता तथा वैज्ञानिक प्रगति की अंधी दौड़ के कारण मनुष्य प्रकृति से दूर होता जा रहा है। वह अपने लिए इतना समय नहीं निकाल सकता कि कुछ समय प्रकृति की सुंदरता को निहारने में व्यतीत कर सके। पैसा कमाने की होड़ व्यक्ति के भीतर इस कदर मौजूद है कि वह स्वयं के लिए भी समय नहीं निकालना चाहता।

3. पशु–पक्षी उसी प्रकार आदमीयत शब्द का प्रयोग करते होंगे, जिस प्रकार हम हैवानियत शब्द तिरस्कार के साथ प्रयोग करते हैं। जब पशु–पक्षियों को लोगों के भीतर स्वयं का दुश्मन दिखाई पड़ता होगा तब वे आदमीयत शब्द का प्रयोग करते होंगे। तथा उसमें अपना सारा कड़वा अनुभव व्यक्त करते होंगे। कुछ पाले हुए पक्षियों या कुत्ते का स्वजन–द्रांह करते देख, वे कहते होंगे कि क्या करें। पशु तो पशु ही है और पक्षी आदमीयत का रंग लगने से बिगड़ गए हैं। प्राचीन समय अच्छा था जब देहात और जंगल के पशुओं मे ज़्यादा आत्मीयता थी। वे मानवता के ऊँचे–ऊँचे आदर्श नहीं जानते क्योंकि मानव जाति का अनुभव बहुत कड़वा है।

4. लेखक मसूरी के हिमशिखरों तथा बादलों के दर्शन के लिए इसलिए तड़पते हैं, क्योंकि इनमें मनुष्य को महान सूचना देने की शक्ति है। ये बादल दसों दिशाओं में दौड़ते हुए अपना आकार, स्वरूप और गठन भी समय–समय पर बदलते रहते हैं। कभी फूलते हैं और कभी पिघल जाते हैं। एक पल में सफ़ेद लेकिन अगले ही क्षण श्याम और पल भर में वर्णविहीन ये बादल हमें संदेश देते हैं कि परिवर्तन से न अकुलाना हमारा व्रत है। परिवर्तन का आनंद लूटना तथा बाद में उनसे परे होना ही हमारी जीवन–साधना है। अत: मनुष्य को जीवन में आए उतार–चढ़ाव से नहीं घबराना चाहिए।

5. प्रस्तुत रचना का उद्देश्य छात्रों को प्रकृति–प्रेम की ओर आकृष्ट करना तथा व्यक्ति की प्रकृति के प्रति सोई हुई चेतना को जगाना है। पर्यावरण–संरक्षण का संदेश देना भी इस रचना का उद्देश्य है। ताकि प्रकृति को उसके वास्तविक रूप में सुरक्षित रखा जा सके। कृत्रिम बगीचा लगाकर हम प्रकृति की कमी को पूरा नहीं कर सकते। अत: वैज्ञानिकों को आविष्कार करते हुए इस तथ्य को समझना चाहिए कि जितने भी विस्फोट हुए हैं तथा जितनी भी प्रकृति के साथ छेड़छाड़ हुई है उसका भयंकर परिणाम बाढ़ भूकंप के रूप में देखने को मिला है।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-30-31 (भाषा–ज्ञान)

क.
1. पीड़ित – हमें पीड़ित व्यक्ति की मदद करनी चाहिए।
2. दंडित – चोर को दंडित किया गया।
3. लाभान्वित – मेहनती लोग लाभान्वित होते हैं।
4. शोभित – सम्राट के सिर पर ताज शोभित होता है।
5. मोहित – शकुंतला को देखकर दुष्यंत मोहित हो गए थे।

ख.
1. विहग, नभचर
2. शैल, पहाड़
3. तुहिन
4. भू, वसुंधरा
5. द्विज, पंडित
6. पयोधि, उदधि

ग.
1. बाज़ार – कर्म कारक
2. शेर की – संबंध कारक
3. एकांत में – अधिकरण कारक
4. देर के लिए – संप्रदान कारक
5. मुख से – करण कारक

Page-32

घ.

<u>आदमीयत</u>	बचपन
मनुष्यता	ऊँचाई
मित्रता	व्यक्तित्व

(कौशल परीक्षण)

1. ग्रामीण और शहरी वातावरण में निम्नलिखित अंतर पाए जाते हैं–
    - गाँव के लोग जहाँ दूसरों के साथ घनिष्ठ संबंध विकसित करते हैं तथा हर समय दूसरों की मदद करते हैं, वहीं शहरी लोग आपस में ही एक-दूसरे से ईर्ष्या का भाव रखते हैं।
    - गाँवों में जहाँ सुविधाओं की कमी है तो वहीं शहरी जीवन सुविधाओं से लैस है।
    - शहरी जीवन रोज़गार के अधिक अवसर प्रदान करता है किंतु ग्रामीण जीवन में ऐसा नहीं होता।
    - शहरी जीवन के लोगों का दृष्टिकोण स्वार्थपरक होता है किंतु ग्रामीण लोग मैत्रीपूर्ण स्वभाव रखते हैं।
    - गाँवों में शुद्ध वायु, पौष्टिक भोजन प्राप्त होता है तथा प्रदूषण नहीं होता है, वहीं शहरों में इसके विपरीत होता है।
    - गाँव की तुलना में उच्च शिक्षण संस्थान शहरों में अधिक है।
2. प्रकृति के साथ आत्मीयता स्थापित करने के लिए आवश्यक है कि हम उसके रहस्यों को जानें। प्रकृति के रहस्यों को हम तभी जान पाएँगे जब हम उसके निकट जाएँगे। उसके निकट जाने के लिए हमारे मन में प्रकृति के प्रति लगाव, उत्सुकता एवं जिज्ञासा होनी चाहिए। प्रकृति मनुष्य से कुछ लेती नहीं अपितु देती है, फिर भी मनुष्य सुंदर प्रकृति से शत्रुता, द्वेष तथा उसके प्रति लापरवाही बरतता है। प्रकृति के साथ हमारा संबंध जितना प्रगाढ़ होता जाएगा, मनुष्य का जीवन दिन-प्रतिदिन उतना ही दीर्घ होता जाएगा। अतः प्रकृति के साथ आत्मीयता का भाव हम तभी अपने भीतर उत्पन्न कर पाएँगे जब हम उससे प्रेम करें।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।
3. विद्यार्थी स्वयं करें।

4 उत्तर-पूर्वी भारत

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-38 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. 'ईटा फोर्ट' किला अरुणाचल प्रदेश में है। ये भारत का वह प्रदेश है जहाँ सबसे पहले सूर्योदय होता है। 'ईटा फोर्ट' के आस-पास का प्राकृतिक वातावरण काफ़ी मनमोहक है। ईटा फोर्ट की कुछ अन्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं–
    - यह किला 80 लाख ईंटों से बना है।
    - यह राज्य में पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है।
    - यह किला 14वीं शताब्दी का एक ऐतिहासिक किला है।
    - ईटा फोर्ट के नाम पर ही ईटानगर शहर का नाम रखा गया है।
2. शाही उज्जयंता पैलेस त्रिपुरा में स्थित है जिसका निर्माण 1901 में महाराजा राधाकिशोर माणिक्य ने करवाया था।
3. त्रिपुरा के मुख्य आकर्षण 'शाही उज्जयंता

पैलेस' रुद्रसागर झील, नीरमहल किला, आदि हैं।

4. हवाई मार्ग एवं रेल मार्ग से जुड़ा होने के कारण दिमापुर शहर को नागालैंड राज्य का 'प्रवेश द्वार' कहा जाता है।

5. असम राज्य 'पूर्व की ज्योति' के नाम से विख्यात है, यह राज्य वन-प्रदेशों, नदियों, झरनों और सुंदर पर्वतमालाओं से भरपूर है। इसके अतिरिक्त असम अपनी प्रमुख फ़सलों; जैसे- चाय, कपास, जूट, चावल, कपास, रेशम के लिए प्रसिद्ध है।

Page-39 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. द 2. अ

3. ब 4. स

ख. 1. अंग्रेजों को 'पोलो' खेल मणिपुरियों ने सिखाया था।

2. निंगोल, ईद, रमज़ान, चाकाउबा, कुकी-चिन-मिजो और क्रिसमस आदि मणिपुर में मनाए जाने वाले प्रमुख त्योहार हैं।

3. मणिपुर राज्य की सुंदरता के कारण इसे 'भारत का हीरा' कहा गया है।

ग. 1. नीरमहल नामक किला मुगलकालीन स्थापत्य कला का एक खूबसूरत नमूना है। यह किला इसलिए प्रसिद्ध है क्योंकि यहाँ पर सरदी के मौसम में झील के आसपास पक्षियों का जमघट लगा रहता है। यहाँ के निवासी गोरिया पूजा के समय जमातिया और त्रिपुरी लोग 'गोरिया नृत्य' का प्रदर्शन करते हैं। यहाँ का प्राकृतिक दृश्य तथा सुहानी जलवायु सभी को आकर्षित करती है।

2. नागालैंड विनम्र लोगों की, किसानों की तथा प्राकृतिक सौंदर्य एवं अनूठी सांस्कृतिक भूमि है। यह राज्य भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र में खूबसूरत वादियों के बीच बसा है। प्राकृतिक सौंदर्य एवं अनूठी संस्कृति के धनी इस प्रदेश को राफ़्टिंग के लिए बेहतरीन स्थान माना जाता है। राज्य की राजधानी कोहिमा के दक्षिण में 15 किलोमीटर की दूरी पर 'जापफू पीक' नामक पहाड़ है। यहाँ से सूर्योदय का दृश्य बड़ा ही खूबसूरत नजर आता है। यहाँ एक खूबसूरत 'दजुकोउ घाटी' भी है। यह घाटी फूलों के खूबसूरत गुलदस्ते जैसी है। यहाँ के सदाबहार जंगलों के ऊँचे-ऊँचे पेड़ 'गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' में शामिल हैं। प्राकृतिक सुंदरता के कारण नागालैंड को 'पूरब का स्विट्जरलैंड' भी कहा जाता है।

3. मिज़ोरम में सीढ़ीदार खेती और झूम खेती-दोनों ही की जाती हैं। अपनी रेशाहीन अदरक के अतिरिक्त मिज़ोरम धान, मक्का, सरसों, गन्ना, तिल, चावल, कपास जैसी मुख्य फ़सलों के लिए मशहूर है।

4. सबसे नम राज्य मेघालय है जिसे 'बादलों का घर' कहा जाता है। इस राज्य का एक तिहाई हिस्सा पहाड़ी जंगलों से घिरा है। जिसकी वजह से यहाँ पर सबसे ज़्यादा वर्षा होती है। इसी वजह से मेघालय को सबसे नम राज्य कहा जाता है।

5.
- बिहू असम का प्रसिद्ध त्योहार है, जो साल में तीन बार मनाया जाता है। बिहू उत्सव में असम की एकता और सुंदरता निखर उठती है।
- माघ के महीने में 'माघी बिहू', कार्तिक मास अर्थात अक्तूबर के महीने में 'कंगाली बिहू' और बैसाख अर्थात अप्रैल के मध्य में 'बोहागी या रोंगाली बिहू' मनाया जाता है।

- यह त्योहार मुख्य रूप से खेती से जुड़ा हुआ है। इसमें युवा पुरुष और महिलाएँ दोनों ही नृत्य करते हैं।

6 'शाद सुकमिनसिम' मेघालय का एक नृत्य है, जिसे 'सुखी दिल' का नृत्य माना जाता है। सिर्फ़ अविवाहित पुरुष और महिलाएँ ही इस नृत्य के लिए योग्य माने जाते हैं। वे अपनी पारंपरिक वेशभूषा में ढोल, नगाड़े के साथ इस नृत्य को करते हैं।

7. उत्तर पूर्वी भारत इसलिए विशिष्ट है क्योंकि इसके सात राज्य, पूरी दुनिया में अपनी प्राकृतिक संपदा के लिए प्रख्यात हैं। इन राज्यों को 'सेवन सिस्टर्स' के नाम से जाना जाता है। प्राकृतिक संपदा तथा सांस्कृतिक वैभव का जैसा असीम भंडार यहाँ बिखरा पड़ा है, वैसा देश में ही नहीं, शायद पूरी दुनिया में अन्यत्र दुर्लभ है। यहाँ विभिन्न कुलों की अनगिनत भाषाएँ, अनगिनत लोग, अनगिनत संस्कृतियाँ ऐसी बहुरंगी रचना रचती हैं कि देखने-समझने वाला मोहित हो जाता है। अकेले इस क्षेत्र में 51 प्रकार के वन हैं।

Page-40 (श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. प् + र् +अ + द् +ए + श् + अ
2. ज् + ई + व् + अं + त् + अ
3. क् + ष् + ए + त् + र् + अ
4. व् + इ + व् + इ + ध् + अ

ख. 1. मैंने 2. क्या
3. जैसा, वैसा 4. कौन
5. खुद 6. क्या
7. कौन 8. तुम

ग. 1. गुणवाचक विशेषण
2. गुणवाचक विशेषण
3. संख्यावाचक विशेषण
4. संख्यावाचक विशेषण
5. परिमाणवाचक विशेषण
6. गुणवाचक विशेषण

Page-41

घ. 1. सकर्मक क्रिया
2. अकर्मक क्रिया
3. सकर्मक क्रिया
4. सकर्मक क्रिया

(कौशल-परीक्षण)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. सिक्किम

सिक्किम भारत का एक पर्वतीय राज्य है। यह राज्य पश्चिम में नेपाल, उत्तर तथा पूर्व में चीनी तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र तथा दक्षिण-पूर्व में भूटान से लगा हुआ है। सिक्किम राज्य की स्थापना 16 मई, 1975 में हुई थी। इस राज्य की राजधानी गंगटोक है। इस राज्य में ज़िलों की संख्या 4 है। राज्य की प्रमुख फसलें मक्का, चावल, गेहूँ, बड़ी इलायची, अदरक आदि हैं। राज्य का राजकीय फूल नोबइल ऑर्चिड है। इस राज्य का क्षेत्रफल 7096 वर्ग किलोमीटर है। इस राज्य के बड़े शहर पीलिंग, गंगटोक, युकसम, मंगन, जोरेथंग, गेजिग हैं। भारत में 'बड़ी इलायची' का सबसे बड़ा उत्पादक सिक्किम है। 'नेपाली' सिक्किम की प्रमुख भाषा है। सिक्किम एक

कृषि राज्य है और यहाँ सीढ़ीदार खेतों में पारंपरिक पद्धति से खेती की जाती है।

2. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करने के लिए कहें।

3. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करने के लिए कहें।

4. पर्यटन का अर्थ है–घूमना, मनुष्य खुद की आनंद-प्राप्ति और जिज्ञासा-पूर्ति के लिए भ्रमण करता है। ऐसे पर्यटन में सुख प्राप्त होता है। ऐसे पर्यटन से जीवन की भारी-भरकम चिंताओं से मुक्ति मिलती है। पर्यटन का दूसरा लाभ है–देश-विदेश की जानकारी। इससे हमारा ज्ञान समृद्ध होता है। पुस्तकीय ज्ञान उतना प्रभावी नहीं होता जितना कि प्रत्यक्ष ज्ञान। पर्यटन से हमें देश-विदेश के खान-पान, रहन-सहन तथा सभ्यता-संस्कृति की जानकारी मिलती है। इससे हमारे मन में बैठे हुए कुछ अंधविश्वास टूटते हैं। हमें यह विश्वास होता है कि विश्व-भर का मानव मूल रूप से एक है।

5. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करने के लिए कहें।

सुझावित आवधिक प्रश्न-पत्र–1

खंड 'अ'

Page-43

क. 1. तार भेजने का कोई निश्चित समय नहीं होता था। तत्काल सूचने देने के लिए देर रात को भी तार भेजा जाता था।

2. तार मिलने का कोई निश्चित समय नहीं होता था। किसी भी समय तारवाला तार पहुँचाता था।

3. तार द्वारा आया लिफ़ाफा खोलना कठिन इसलिए होता था क्योंकि उस समय परिवार के सदस्य घेरे रहते थे तथा सबके मन में डर रहता था कि कोई दुखद समाचार सुनने को मिलेगा।

खंड 'ब'

ख. 1. प्राकृतिक – प् + र् + आ + क् + ऋ + त् + इ + क् + अ

2. संस्कृति – स् + अं + स् + क् + ऋ + त् + इ

ग. 1. करण कारक– राधा ने दूध से खीर बनाई।

2. अपादान – पेड़ से आम गिरा।

घ. 1. धरती – धरा, भू

पर्वत – गिरि, पहाड़

फूल – पुष्प, सुमन

मछली – मीन, मकर

ङ. 1. संख्यावाचक विशेषण

2. गुणवाचक विशेषण

च. 1. आदमी – अदमीयता

2. ऊँचा – ऊँचाई

3. बच्चा – बचपन

4. मित्र – मित्रता

छ. मूल शब्द और प्रत्यय

1. परिचित परिचय + इत

2. पीड़ित पीड़ा + इत

3. घृणित घृणा + इत

4. प्रभावित प्रभाव + इत

Page-43-44

खंड 'स'

ज. 1. लेखिका का बद्रीनाथ यात्रा जाने का कार्यक्रम बना था।

2. लेखिका के प्रवास में कम रहने का कारण पालतू जीवों की देखभाल करना था।

3. फ्लोरा लेखिका के साथ इस कारण से जा रही थी क्योंकि फ्लोरा लेखिका (महादेवी वर्मा) के बिना रह नहीं सकती थी।

झ. 1. ब 2. ब

3. ब 4. अ

ञ. बादल जिस प्रकार सभी दिशाओं में पहुँचकर अपना आकार, स्वरूप तथा गठन परिवर्तित करते रहते हैं, उसी प्रकार ये मानव को परिवर्तन का संदेश देते हैं कि परिवर्तन ही जीवन का नियम है। हमें समाज के साथ चलना चाहिए न कि पुराने ढर्रे को अपनाए रखना चाहिए।

ट. 1. बढ़ते शहरीकरण, स्वकेंद्रित होने की भावना, व्यक्ति के भीतर बढ़ती स्वार्थपरता तथा वैज्ञानिक प्रगति की अंधी दौड़ के कारण मनुष्य प्रकृति से बिछुड़ गया। वह अपने लिए इतना समय नहीं निकाल सकता कि कुछ समय प्रकृति की सुंदरता को निहारने में व्यतीत कर सके।

2. छात्रावास के सन्नाटे और फ्लोरा तथा लेखिका के अभाव के कारण सोना प्राय: कंपाउंड से बाहर निकल जाती थी। कहीं कोई इतनी बड़ी हिरनी को पकड़ न ले, इसी आशंका में माली ने उसे एक लंबी रस्सी से बाँधना आरंभ कर दिया। एक दिन न जाने किस स्तब्धता की स्थिति में, बंधन की सीमा भूलकर वह बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुख के बल धरती पर आ गिरी। वही उसकी अंतिम साँस और उछाल थी, जो सोना की मृत्यु का कारण बनी।

3. त्रिपुरा के मुख्य आकर्षण शाही उज्जयंता पैलेस, रुद्रसागर झील और नीरमहल है।

4. हवाई मार्ग एवं रेलमार्ग से जुड़ा होने के कारण दिमापुर शहर को नागालैंड का 'प्रवेश द्वार' कहा जाता है।

5. मिज़ोरम की धरती पर प्राकृतिक रूप से सुंदर, कई प्रकार के प्राकृतिक दृश्य, समद्ध वनस्पति और जीव, पाईन के समूह और बाँस के घरों वाले अनूठे गाँव देखने को मिलते हैं। यहाँ वर्ष भर सुहाना मौसम बना रहता है। मिज़ोरम में सीढ़ीदार खेती और झूम खेती दोनों ही की जाती है। मिज़ोरम अपनी रेशाहीन अदरक के लिए मशहूर है। धान, मक्का, सरसों, गन्ना, तिल और आलू यहाँ की प्रमुख फ़सलें हैं। मिज़ोरम की सबसे बड़ी झील 'पाला झील' है जो सहसा जिले में स्थित है। मिज़ोरम के लोकप्रिय सांस्कृतिक त्योहार मिमकुट, पॉलकुट और चपचार कुट है। चैरो सबसे अनूठा और जीवंत नृत्य रूप है। इन्हीं विशेषताओं के कारण मिज़ोरम राज्य प्रसिद्ध है।

खंड 'द'

ठ. विद्यार्थी स्वयं करें।

ड. प्रस्तुत चित्र पर्यावरण से संबंधित है। इस चित्र में एक बालक नदी के किनारे खड़े होकर रंगीन गुब्बारे फेंक रहा है और जल को दूषित कर रहा है। सड़क पर लाल रंग की गाड़ी विषैला धुआँ छोड़ रही है जिससे वहाँ का वातावरण प्रदूषित हो रहा है। यह कार्बन डाइऑक्साइड वायु को गंदा कर रही है जिसमें व्यक्ति साँस लेता है और अनेक बीमारियों से ग्रसित हो जाता है।

इकाई-II (ध्येय)

5 हिरोशिमा की पीड़ा

(अभ्यास-उत्तर)

काव्य-बोध

Page-47 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. कविता का शीर्षक परमाणु बम हमले से त्रस्त हुए हिरोशिमा के नरसंहार का प्रतीक है।
2. कवि वैज्ञानिकों से इस अनुभूति की अपेक्षा करता है कि उन्हें यह अहसास होना चाहिए कि उनके हाथों ये गलत कार्य हुआ। उन्हें विज्ञान का प्रयोग कल्याणकारी कार्यों में करना चाहिए, न कि विध्वंसात्मक कार्यों में।
3. 'इतिहास उन्हें कभी माफ़ नहीं करेगा!' यह पंक्ति वैज्ञानिकों की ओर संकेत करती है। कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि परमाणु बम बनाकर वैज्ञानिकों ने विनाशकारी प्रवृत्ति की ओर कदम बढ़ाया है, जिससे किसी देश में हुआ नरसंहार मानव जाति की चेतना को झिंझोड़ने के लिए काफ़ी है।

Page-48 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. अ 2. स
3. अ 4. ब

ख. 1. हिरोशिमा में हुए परमाणु बम हमले के कारण जो नरसंहार हुआ, उसकी कल्पना करके ही कवि की नींद अचानक उचट जाती है। कवि भावुक व्यक्ति है। वह सोचने लगता है कि हिरोशिमा के निवासियों ने काफी तकलीफें झेलीं होंगी। वहाँ का वातावरण दूषित हो गया होगा। उस समय परमाणु विस्फोट से धरती बंजर हो गई होगी तथा उसका दुष्परिणाम आज तक उस देश को भुगतना पड़ रहा है। उस युद्ध में 80,000 लोग मौके पर मारे गए और हज़ारों लोग इस उपजे रेडिएशन के घातक रोगों का शिकार हुए थे।

2. हिरोशिमा-नागासाकी का संबंध जापान देश से है।

3. हिरोशिमा-नागासाकी में भीषण नरसंहार अमेरिका द्वारा इन शहरों पर परमाणु बम गिराए जाने के कारण हुआ था, क्योंकि अमेरिका खुद को एक शक्तिशाली देश के रूप में स्थापित करना चाहता था। 9 अगस्त 1945 को परमाणु बम गिराकर अमेरिका ने अपने आपको शक्तिशाली राष्ट्र सिद्ध तो कर दिया, लेकिन इस दिन को मानव इतिहास में 'काला दिन' भी कहा जाता है।

4. हिरोशिमा की पीड़ा कविता का भाव यह है कि भले ही परमाणु बम हिरोशिमा पर गिराया गया किंतु यह पीड़ा केवल उसी शहर की नहीं अपितु सभी देशों की पीड़ा है। किसी एक देश में हुआ ऐसा नरसंहार मानव-जाति की चेतना को झिंझोड़ सकता है और ऐसा हुआ भी। विज्ञान भले ही इतनी प्रगति कर चुका हो,

किंतु परमाणु बम बनाकर वैज्ञानिकों ने विज्ञान का दुरुपयोग ही किया है।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क.	1.	रात्रि, निशा	2.	नयन, लोचन
	3.	आदमी, मनुष्य	4.	हस्त, कर
	5.	वतन, मुल्क	6.	समय, काल

Page-49

ख.	1.	अक्षि	2.	निद्रा
	3.	हस्त	4.	क्षण
	5.	अश्रु	6.	रात्रि
ग.	1.	आविष्कारक	2.	दुखांत
	3.	ऐतिहासिक	4.	सुनार
	5.	ईश्वरीय	6.	राष्ट्रीय

घ. 1. कर – हाथ, किरण, टैक्स, 'करना' क्रिया का रूप
2. सोना – शयन, स्वर्ण
3. हार – पराजय, माला
4. मित्र – सूर्य, दोस्त
5. पत्र – चिट्ठी, पत्ता, पन्ना
6. नर – पुरुष, मनुज, मानव

(कौशल-परीक्षण)

1. विनाशकारी युद्ध से न केवल जान-माल का नुकसान होता है अपितु मानसिक अशांति भी उत्पन्न हो जाती है। ऐसे युद्धों से दूर रहने के लिए सर्वप्रथम वैज्ञानिकों को ऐसे परमाणु बम बनाने पर रोक लगा देनी चाहिए, जो भीषण नरसंहार का कारण बनें। सभी देशों को आपस में शांति समझौतों को अपनाना चाहिए, जिससे कोई देश किसी अन्य देश पर आक्रमण न कर सके। आपसी सहयोग की भावना सभी देशों के मध्य होगी तो देश आपस में सहयोग करेंगे न कि विनाशकारी युद्ध।

2. संसार को युद्धों से नहीं अपितु शांति और प्रेम से जीता जा सकता है। युद्ध से किसी देश की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक सभी प्रकार की परिस्थितियाँ प्रभावित होती हैं। वहाँ के खुशहाल समाज पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए आवश्यक है कि नकारात्मक परिस्थितियाँ उत्पन्न न करके देश को शांति तथा प्रेम का वातावरण प्रदान किया जाए। दुनियाभर में निरंतर बढ़ रही अशांति और उथल-पुथल में व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं शांति बहुत ही दुर्लभ हो चुकी है। लोगों के मध्य खुशी एवं शांति आदर्श का प्रतीक मानी जाती है। इसलिए अशांत विश्व में शांति कायम करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने विश्व शांति दिवस या अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस के लिए सितंबर का माह चुना। शांति और प्रेम स्थापित करने के लिए आवश्यक है कि एक देश को दूसरे देश के विरुद्ध आक्रामक कार्यवाही नहीं करनी चाहिए। शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति का पालन करना चाहिए।

Page-50 (विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।
3. विद्यार्थी स्वयं करें।
4. विद्यार्थी स्वयं करें।

6 हार की जीत

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-57 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. बाबा भारती का घोड़ा बहुत सुंदर तथा बलवान था। वह तेज़ गति से दौड़ता था और मालिक के आदेशों का पालन करता था। वह अपने मालिक बाबा भारती को उनके पाँव देखकर ही पहचान लेता था।

2\. खड़्गसिंह एक प्रसिद्ध डाकू था, जिसका नाम सुनकर लोग काँपते थे। उसे जो वस्तु पसंद आ जाती थी उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उस वस्तु को पाने के लिए वह छल-कपट का सहारा लेता था। वह अभिनय करने में माहिर था जिसके सहारे वह अपाहिज का रूप धारण करके, बाबा भारती की करुण आवाज़ में उनका घोड़ा लेकर फ़रार हो जाता था।

3\. खड़्गसिंह, बाबा भारती का घोड़ा पाना चाहता था । खड़्गसिंह ने बाबा भारती को चेतावनी दी थी कि वह उनका घोड़ा उनके पास नहीं रहने देगा। खड़्गसिंह की इसी बात से भयभीत होकर बाबा भारती रात को सो नहीं पाते थे।

4\. खड़्गसिंह ने सुलतान को प्राप्त करने के लिए अपाहिज का रूप धारण किया और एक वृक्ष की छाया में पड़ा कराहने लगा। उसकी दयनीय दशा को देखकर बाबा भारती द्रवित हो उठे। उन्होंने डाकू को घोड़े पर बिठा दिया तथा स्वयं घोड़े की लगाम लेकर पैदल चलने लगे। डाकू खड़्गसिंह ने घोड़े की लगाम लेकर एक झटका दिया और सुलतान को ले भागा।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क.	1.	(✓)	2.	(✓)
	3.	(✗)	4.	(✓)
	5.	(✗)		
ख.	1.	द	2.	अ
	3.	स	4.	ब

Page-58

ग. 1. सुलतान के बारे में बाबा भारती को यह भ्रांति हो गई थी कि वे उसके बिना नहीं रह सकेंगे। वे अपने घोड़े से स्नेह करते थे। उसे अपने हाथ से सरहरा, दाना खिलाते थे तथा हर प्रकार से उसकी देखभाल करते थे। उनके लिए घोड़ा ही सब कुछ था क्योंकि भगवद् भजन करने के बाद जो समय बचता था, वह घोड़े को अर्पित कर देते थे। उन्होंने रुपया, माल, असबाब, ज़मीन सभी कुछ छोड़ दिया था, यहाँ तक कि उन्हें नगर के जीवन से घृणा हो गई थी और गाँव के बाहर जाकर छोटे से मंदिर में रहने लगे थे।

2. बाबा भारती ने खड्गसिंह से यह प्रार्थना की कि युक्तिपूर्वक उनका घोड़ा चुराने में कामयाब होने की घटना को वह किसी को न बताए, क्योंकि यदि लोगों को इस घटना का पता लग गया तो वे किसी दीन-दुखी पर विश्वास नहीं करेंगे और न ही किसी प्रकार की मदद करेंगे।

3. बाबा भारती के शब्द खड्गसिंह के कानों में गूँजते रहे। वह सोचने लगा कि बाबा के विचार कितने उच्च हैं तथा उनका भाव कितना पवित्र है। इसलिए उसने रात्रि के अंधकार में अस्तबल में जाकर सुलतान को वहीं बाँध दिया। उस वक्त उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

4. सुलतान को पुनः पाकर बाबा भारती बहुत खुश थे। वह अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे, मानो कोई पिता बहुत दिनों से बिछुड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। वह बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते। फिर वे संतोष से बोले, "अब कोई दीन-दुखियों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।"

5. कहानी में हारकर भी बाबा भारती जीते और खड्गसिंह जीतकर भी हार गया। वह इसलिए संभव हो सका क्योंकि बाबा भारती के शब्दों ने उसे सोचने के लिए मजबूर कर दिया और वह रात के चौथे पहर में घोड़े को उसके स्थान पर बाँध आया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। डाकू को अपनी गलती का अहसास हुआ और उसकी आँखों से नेकी के आँसू बहने लगे।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ विस्तार)

1. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करने के लिए कहें।
2. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करने के लिए कहें।

(भाषा-ज्ञान)

क.

1.	कुरूप	2.	अप्रसन्न
3.	बेचैन	4.	अपकीर्ति
5.	अनुपस्थित	6.	धीर
7.	अविश्वास	8.	असावधान
9.	निराशा	10.	अपवित्र

ख. ब. – बाहर, बाँका, बालकों, बाहुबल, अस्तबल, संबंध, बहुत

व – वस्तु, वायु, सवार, आवाज़, वाणी, वापस

Page-59

ग. 1. वर्तमान काल –
- आपकी दया है।
- कहो, इधर कैसे आ गए?

2. भूतकाल –
- रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था।
- वह घोड़ा बहुत सुंदर था।

3. भविष्यत्काल –
- लोगों को अगर इस घटना का पता चल गया तो वे किसी दीन-दुखी पर विश्वास नहीं करेंगे।
- मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।

घ.

1.	अपाहिज	2.	प्रकट
3.	विस्मय	4.	परमात्मा

5.	आश्चर्य	6.	ठिकाना
7.	दुखिया	8.	प्रसन्नता

ङ. **क्रियाविशेषण** **भेद**

1.	प्रतिदिन	–	कालवाचक क्रियाविशेषण
2.	अंदर	–	स्थानवाचक क्रियाविशेषण
3.	कुछ	–	परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
4.	सुबह	–	कालवाचक क्रियाविशेषण
5.	अचानक	–	रीतिवाचक क्रियाविशेषण
6.	बाज़ार	–	स्थानवाचक क्रियाविशेषण
7.	बहुत	–	परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
8.	परिश्रमपूर्वक	–	रीतिवाचक क्रियाविशेषण

Page-60

(कौशल-परीक्षण)

1. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करने के लिए कहें।

2. यह कहानी हमें जीव-जंतुओं से प्रेम करना, मानवता, परोपकार की सीख, सद्वाणी के महत्व के बारे में सीख देती है।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करने के लिए कहें।

2. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करने के लिए कहें।

3. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करने के लिए कहें।

4. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करने के लिए कहें।

5. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करने के लिए कहें।

7 एक पिता का पत्र

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-63 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. प्रस्तुत पत्र अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने अपने पुत्र के शिक्षक को लिखा है।

2. दूसरों को आतंकित करने, कटाक्ष करने वाला स्वयं कमजोर, भयभीत और भयाकुल होता है, क्योंकि उसके भीतर चोर होता है। ऐसा व्यक्ति धोखेबाज़ होता है, उसमें आत्मविश्वास की कमी होती है।

3. अत्यधिक पीड़ा से आहत होने पर लिंकन अपने पुत्र से यह चाहते थे कि वह पीड़ा सहकर भी मुसकरा सके और खुशी के गीत गा सके। यदि उदासी में आँसू बहते हों, तो

उन्हें बहने दें। इसमें कोई शर्म नहीं है, यदि कोई कुछ भी कहता हो तो उसे कहने दें। वह किसी की बात की परवाह नहीं करे।

4. लिंकन अपने पुत्र में सहनशीलता का गुण इसलिए भरना चाहते थे, ताकि वह बहादुर बन सके और वह हर प्रकार की विषम परिस्थितियों का सामना कर सके।

Page-63-64 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. (✗) 2. (✗)
3. (✓) 4. (✓)

ख. 1. अ 2. ब
3. स

ग. **1.** अब्राहम लिंकन यह पत्र लिखकर अपने पुत्र के चारित्रिक गुणों के विकास का दायित्व उसके शिक्षक को सौंपना चाहते थे, क्योंकि वे जानते थे कि शिक्षक के माध्यम से ही उनका पुत्र बहादुर बन सकता है। उनका पुत्र शिक्षक की बातों को ध्यान से सुनेगा तथा शिक्षक के द्वारा दी गई शिक्षा को अपने जीवन में अमल करेगा।

2. लिंकन अध्यापक से ऐसा इसलिए चाहते हैं, क्योंकि लोहा तपने से ही खरा होता है, ताप पाकर ही सोना शुद्ध होता है। अत्यधिक प्यार से समझाने पर बच्चा समझने की बजाय अन्य प्रकार की बातें करने लगता है और बिगड़ जाता है। यदि शिक्षक नैतिक गुणों का विकास पुत्र में करते हैं तो वे सख्ती भी कर सकते हैं। शिक्षक साम, दाम दंड के अनुसार कार्य कर सकते हैं। वे इस सच्चाई से अवगत थे कि व्यक्ति परिचित की बात को या उनकी बात पर ध्यान नहीं देगा अपितु शिक्षक की बात पर अमल करेगा।

3. स्वयं पर असीम विश्वास करने से जीवन में मनुष्यता पर खुद का भरोसा बना रहता है। वह अपने विवेक का प्रयोग करके अच्छे-बुरे व्यक्ति की पहचान कर सकता है। वह अपने विचारों पर दृढ़ रहता है। जीवन में मिलने वाली हार को झेल सकता है, जीत की खुशी मना सकता है। सनकी और बहुत अधिक मीठा बोलने वाले व्यक्ति से दूर रह सकता है।

4. स्वयं कमाया हुआ एक डॉलर, मिले हुए पाँच डॉलरों से ज़्यादा मूल्यवान इसलिए होता है क्योंकि वह एक डॉलर हमारी अपनी मेहनत का होता है। उस डॉलर को पाने के लिए हमने कड़ी मेहनत की होती है हमें पैसों का महत्त्व पता चलता है। हम स्वयं के कमाए हुए डालर को व्यर्थ में खर्च नहीं करते।

घ. **1.** 'लोहा तपने से ही खरा होता है' इस पंक्ति का आशय यह है कि हम अगर हर काम को अधिक साहस और हिम्मत के साथ करेंगे तो ज़िंदगी में सफल हो पाएँगे। इसलिए हमें हर काम को सहानुभूति से समझना चाहिए और धैर्य से करना चाहिए।

2. 'वह लकीर का फकीर बनकर निरर्थक शोर करने वाली भीड़ के पीछे कदापि न भागे' इस पंक्ति का आशय यह है कि अब्राहम लिंकन चाहते हैं कि उनका पुत्र अपने विवेक के द्वारा सत्य को परखे तत्पश्चात्

सही तथा अच्छा ग्रहण करे। अंध विश्वास तथा किसी बात पर विश्वास न करें तथा बहकावे से दूर रहें। उन्होंने निरर्थक शोर करने वाली भीड़ से दूर रहने की सलाह दी है।

ङ. **1.** लेखक अपने पुत्र को किताबों में छिपा आश्चर्य और ज्ञान का खज़ाना दिखाना चाहते हैं।

2. लेखक अपने पुत्र को आकाश में उड़ते पंछियों के रहस्य, सूर्य की रोशनी में मधुमक्खियों के निनाद तथा हरी-भरी पहाड़ियों पर खिले फूलों के बारे में चिंतन के लिए वक्त देना चाहते हैं।

3. प्रकृति के बारे में चिंतन करने से कर्तव्यबोध और चारित्रिक गुणों का विकास होता है, क्योंकि प्रकृति हमें कई रूप से शिक्षा देती है।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

1. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करने के लिए कहें।
2. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करने के लिए कहें।

Page-65 (भाषा-ज्ञान)

क. **1.** शत्रुओं के साथ मित्र भी होते हैं।

2. दुष्ट लोगों के साथ-साथ आदर्श प्रणेता भी होते हैं।

3. धोखे से सफल होने की अपेक्षा असफल होना सम्मानीय है।

4. खुद पर असीम विश्वास करना सिखाना चाहिए ताकि मनुष्यता पर उसका भरोसा बना रहे।

ख. 1. विश्व, जग, भव

2. अंबर, नभ, व्योम

3. भानु, दिनकर, आदित्य

4. आग, अनल, पावक

5. खग, विहग, शकुनि

6. सखा, मीत, सहचर

ग. 1. न्यून 2. खोटा

3. पाताल 4. सज्जन

5. अनिच्छा 6. शत्रु

घ. 1. जो 2. कि

3. यदि 4. जिसे

5. क्योंकि

Page-66

ङ. 1. आत्मविश्वासी

2. विश्वासी

3. मृदुभाषी

4. ईर्ष्यालु

5. ऐतिहासिक

(कौशल-परीक्षण)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. 'शिक्षक दिवस' पर अपने प्रिय अध्यापक को उनकी दी हुई सीख के प्रति धन्यवाद देते हुए पत्र-

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

बाल भारती पब्लिक स्कूल,

लाजपत नगर दिल्ली

दिनांक- 8 मई 20XX

आदरणीय महोदय,

मैं अपने प्रिय अध्यापक श्री नीरज शाह का दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ, क्योंकि उन्होंने मेरे जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आपने मेरी सफलता प्राप्ति के लिए कई प्रकार से मदद की है। आपने मेरे जीवन को सही आकार में ढाला है और मुझे सही मार्ग दिखाया है, जिससे कि आज मैं अपनी कक्षा में अव्वल आ पाया हूँ। इसलिए आज मैं शिक्षक दिवस के अवसर पर आपका अभिनंदन करता हूँ।

मैं आपसे वादा करता हूँ कि मैं अपने जीवन में इसी तरह मेहनत करता रहूँगा, ताकि मैं हर कार्य में सफल हो सकूँ।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

रोहन कपूर

3. **मेरे प्रिय अध्यापक**

अध्यापक संसार में ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं। वे विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हैं। सुयोग्य अध्यापकों की सर्वत्र सराहना की जाती है। श्री विवेक शुक्ला ऐसे ही एक सुयोग्य अध्यापक हैं। वे मेरे प्रिय अध्यापक हैं।

श्री विवेक शुक्ला हमारे कक्षा-अध्यापक हैं। वे अपने विषय के विद्वान हैं। उन्होंने रसायन शास्त्र में एम. एस-सी. की उपाधि प्राप्त की है। वे विज्ञान विषय को इतनी सहजता से जानते हैं कि सभी प्रकार की जटिलताएँ आसानी से समाप्त हो जाती हैं तथा विषय आसानी से समझ आ जाता है। वे अपनी बात उदाहरण देकर मनोरंजक शैली में प्रस्तुत करते हैं। विद्यार्थी एकाग्रचित्त होकर उनकी बातें सुनते हैं। मेरे प्रिय अध्यापक स्वभाव से मिलनसार हैं। वे बच्चों के बीच घुल-मिल जाते हैं। विज्ञान को एक कठिन विषय माना जाता है। बहुत से विद्यार्थी इस विषय का नाम सुनकर ही घबराते हैं। परंतु श्री विवेक शुक्ला ने विद्यार्थियों के अंदर इस विषय के भय को पूरी तरह समाप्त कर दिया है। विद्यार्थी विज्ञान के विषय में अब सर्वाधिक अंक प्राप्त करते हैं। प्रयोगशाला में उनकी उपस्थिति विद्यार्थियों के लिए बहुत प्रेरणादायी होती है। वे प्रयोगों के माध्यम से हमें बताते हैं कि विज्ञान की हमारे दैनिक जीवन में कितनी सार्थकता है।

8 अँधेर नगरी

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-74 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. नगरी का नाम 'अँधेर नगरी' इसलिए था क्योंकि वहाँ प्रत्येक वस्तु टके में मिलती थी। राजा विवेकहीन था जो बिना विचारे न्याय करता था। ऐसे राज्य में मूर्ख और विद्वान दोनों ही बराबर थे।
2. महंत ने नारायण दास को पूर्व दिशा की ओर भिक्षा लेने के लिए भेजा।
3. महंत को इस बात पर यकीन नहीं हो

रहा था कि गोवर्धन दास सात पैसे में साढ़े तीन सेर मिठाई ले आया था।

4. राजा ने गोवर्धन दास को फाँसी पर चढ़ाने का फैसला सुनाकर फ़रियादी के लिए न्याय किया।

5. अंत में फाँसी पर राजा चढ़ा क्योंकि उसने महंत की बात पर विश्वास कर लिया था कि उस शुभ घड़ी में मरने वाला सीधा स्वर्ग जाएगा।

Page-75 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. (✓) 2. (✗)
3. (✗) 4. (✓)
5. (✓)

ख. 1. फाँसी की सज़ा कोतवाल को दी गई थी।
2. कोतवाल के दुबले होने पर राजा ने किसी मोटे आदमी को फाँसी पर चढ़ाने का हुक्म दिया।
3 सज़ा बकरी मरने के अपराध की दी जा रही थी।

ग. 1. ब 2. अ
3. स

घ. 1. महंत जी अँधेर नगरी में इसलिए नहीं रुके, क्योंकि उन्हें लगता था कि जिस नगरी में टके सेर भाजी और टके सेर खाजा बिकता हो, वहाँ रहना ठीक नहीं। उन्हें अहसास हो गया था कि जिस राज्य का राजा ही विवेकहीन हो, जो बिना विचार के न्याय करे तो उसकी प्रजा भी मूर्ख ही होगी। ऐसे राज्य में मूर्ख और विद्वान दोनों ही बराबर होंगे, ऐसा राजा स्वयं का और देश का अहित ही करता है।

2. राजा के दरबार में कल्लू बनिया, कारीगर, चूनेवाला, भिश्ती, कसाई, गड़रिया तथा कोतवाल गुनहगार के रूप में प्रस्तुत किए गए, क्योंकि कल्लू बनिए की दीवार गिरने से फ़रियादी की बकरी मर गई थी और सभी एक-दूसरे पर दोष मढ़ रहे थे।

3. गोवर्धन दास को अपनी गलती का अहसास तब हुआ, जब सिपाही उसे पकड़कर ले जाने लगे। कोतवाल को बकरी के मरने पर जो फाँसी की सज़ा दी गई थी उसे खारिज़ इसलिए कर दिया गया क्योंकि फंदा बड़ा था। इसलिए राजा ने मोटे व्यक्ति को फाँसी पर चढ़ाने का हुक्म दिया। उस समय गोवर्धन को लगा कि यदि वह अपने गुरु का कहा मान लेता तो आज उसे यह दिन न देखना पड़ता।

4. महंत जी ने सिपाहियों से कहा कि वे गोवर्धन के कान में अंतिम उपदेश देना चाहते हैं। इसके उपरांत दोनों आपस में फाँसी पर चढ़ने के लिए बहस करते रहे। बाद में महंत ने कहा कि इस शुभ घड़ी में मरने वाला सीधा स्वर्ग जाएगा और अंततः राजा स्वयं स्वर्ग प्राप्ति के चक्कर में फाँसी पर चढ़ गया। इस प्रकार महंत जी ने गोवर्धन दास को फाँसी के संकट से बचाया।

5. प्रस्तुत नाटक का उद्देश्य यह बताना है कि जिस राज्य में विवेक-अविवेक का भेद न किया जाए, वहाँ की प्रजा सुखी नहीं रह सकती। साथ ही यह उद्देश्य भी प्राप्त होता है कि संकट में बुद्धि से काम लेना चाहिए तथा लालच का फल सदैव बुरा होता है।

Page-76

ङ. 1. गोवर्धन दास ने हलवाई से।
2. राजा ने कल्लू बनिये से।
3. महंत ने सिपाहियों से।
4. गोवर्धन दास ने दूसरे सिपाही से।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. दीवारें 2. बकरियाँ
3. राजाओं 4. भेड़ें
5. मिठाइयाँ 6. किनारे

ख. 1. रंक 2. नरक
3. शिष्य 4. अशुभ
5. कुरूप 6. पश्चिम

ग. 1. उद्धरण चिह्न
2. निर्देशक चिह्न
3. विवरण चिह्न
4. विस्मयादिबोधक अथवा संबोधन चिह्न
5. प्रश्नवाचक चिह्न
6. अर्द्धविराम चिह्न
7. अल्पविराम चिह्न
8. पूर्णविराम चिह्न

घ. 1. मिठाई – मुझे काजू की मिठाई बहुत पसंद है।
2. सवारी – ट्रेन देरी से पहुँचने के कारण रामू को आज सवारी बहुत देर से मिली, जिस कारण वह अत्यंत हताश हो गया था।

Page-77 (कौशल-परीक्षण)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. यदि मैं राजा होता/होती तो अपनी प्रजा का ध्यान ठीक से रखता/रखती। समय-समय पर प्रजा के सुख-दुख, उनकी ज़रूरतों का ध्यान रखता/रखती। मेरे शासन में हर वस्तु का मूल्य निर्धारित होता न कि सभी वस्तुएँ एक ही कीमत पर मिलतीं, जैसा कि अँधेर नगरी में था। इससे शासन की अर्थव्यवस्था ठीक बनी रहती है। मेरे राज में कोई भी भूखा न रहता। जाति, लिंग, वर्ण आदि के आधार पर किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होता। सभी समान होते। गलत कार्य करने वाले को दंड दिया जाता। इस प्रकार मैं अपनी प्रजा को खुशहाल रखता/रखती।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. इस नाटक का एक अन्य अंत हम इस प्रकार भी कर सकते हैं कि जब राजा को यह पता चला कि उस घड़ी में मरने वाला सीधा स्वर्ग जाएगा तो वह महंत समेत सभी को स्वर्ग प्राप्ति हेतु यह आज्ञा देता कि हम सभी स्वर्ग की प्राप्ति करेंगे और इस प्रकार सभी मृत्यु को प्राप्त हो जाते।

3. विद्यार्थी स्वयं करें।

4. एक बार की बात है। एक व्यक्ति था, वह पशु-पक्षियों का व्यापार किया करता था। एक दिन उसने अपने गुरु को पशु-पक्षियों से बातें करते देखा।

उसने अपने गुरु से पूछा कि क्या आप इनकी भाषा समझते हैं?

गुरुजी बोले – "हाँ, मैं यह समझ सकता हूँ कि ये आपस में क्या बात कर रहे हैं?"

उस व्यक्ति ने सोचा कि अगर मुझे यह विद्या मिल जाए तो ये मेरे लिए लाभकारी सिद्ध हो सकती है। उसने सोचा कि वह यह विद्या जरूर सीखेगा।

यह सोचकर वह गुरुजी के पास गया और उनसे पशु-पक्षियों की बोली सीखने की इच्छा प्रकट की। गुरुजी ने उसे विद्या सिखा दी और कहा कि इस विद्या का

कभी दुरुपयोग मत करना। कभी भी लोभ में आकर किसी का अहित मत करना।की बात है। एक व्यक्ति था, वह पशु–पक्षियों का व्यापार किया करता था। एक दिन उसने अपने गुरु को पशु–पक्षियों से बातें करते देखा।

उसने अपने गुरु से पूछा कि क्या आप इनकी भाषा समझते हैं?

गुरुजी बोले – "हाँ, मैं यह समझ सकता हूँ कि ये आपस में क्या बात कर रहे हैं?"

उस व्यक्ति ने सोचा कि अगर मुझे यह विद्‌या मिल जाए तो ये मेरे लिए लाभकारी सिद्‌ध हो सकती है। उसने सोचा कि वह यह विद्‌या जरूर सीखेगा।

यह सोचकर वह गुरुजी के पास गया और उनसे पशु–पक्षियों की बोली सीखने की इच्छा प्रकट की। गुरुजी ने उसे विद्‌या सिखा दी और कहा कि इस विद्‌या का कभी दुरुपयोग मत करना। कभी भी लोभ में आकर किसी का अहित मत करना।

वह व्यक्ति खुश होकर घर लौटा। चूँकि वह जानवरों का व्यापार करता था तो वह जानवरों के पास गया। वहाँ अचानक उसने दो कबूतरों को आपस में बातें करते सुना। वे कहे रहे थे – उसके घोड़े को कोई बीमारी हो गई है और वह एक–दो दिन का मेहमान है। अब वह बचेगा नहीं, बस फिर क्या था उसने घोड़े का इलाज कराने की बजाय उसे अच्छे दाम पर बेच दिया। बाद में पता चला कि वह दो दिन बाद मर गया।

उसे यकीन हो गया कि पशु–पक्षी आपस में जो बातें करते हैं वे सही होती हैं। वे एक–दूसरे के बारे में ठीक से जानते हैं। फिर एक दिन उसने कुत्ते को कहते सुना कि उसकी मुरगियाँ महामारी से मरने वाली हैं। उसने तुरंत मुरगियों को भी बेच दिया। उसे बड़ी प्रसन्नता हुई कि वह नुकसान से बच गया और अपने नुकसान को किसी और के सिर कर दिया।

अब उसके मन में सिर्फ लालच था। वह हमेशा पशु–पक्षियों की बातें सुनने की कोशिश करता रहता।

फिर एक दिन उसने अपनी बिल्ली को कहते सुना कि अपना मालिक बस अब कुछ दिनों का ही मेहमान है। यह सुनते ही वह घबरा गया। उसके लिए यकीन करना मुश्किल था मगर यकीन कैसे न करता। आज तक पशु–पक्षियों की हर बात सच निकली है।

लेकिन अब उसने गधे को भी यही बात कहते सुना तो वह बुरी तरह घबरा गया। वह गुरु के पास पहुँचा और गुरुजी को पूरी सच्चाई बता दी और कहा कि मेरा अंत समय निकट है, इसलिए मुझे कोई ऐसा काम बताइए, जिसके करने से मेरी मुक्ति हो जाए। गुरुजी बहुत नाराज़ हुए और बोले मेरी सिद्‌धि का तुमने बहुत गलत उपयोग किया। अब एक काम करो, जाओ अपने आप को भी बेच दो। गुरुजी बोले अरे मूर्ख सिद्‌धियाँ कभी किसी की गुलाम हुई हैं। इनसान को अपने बुरे कर्मों का फल अवश्य मिलता है। उस फल से कोई सिद्‌धि नहीं बचा सकती। हमेशा याद रखो लालच में आकर कभी भी किसी सिद्‌धि का उपयोग किसी की हानि के लिए नहीं करना चाहिए। इस छोटी–सी कहानी से हमें सीख मिलती है कि कभी भी अपने फ़ायदे के लिए दूसरे का नुकसान नहीं करना चाहिए। पैसा कमाना और लाभ कमाना सही है, मगर किसी को नुकसान पहुँचाकर कमाया गया पैसा कभी सुख नहीं दे सकता।

अर्धवार्षिक परीक्षा प्रश्न-पत्र

खंड 'अ'

Page-79

क. 1. आधुनिक विज्ञान और तकनीक की कृपा से संसार के मनुष्य एक-दूसरे के निकट आ गए हैं।

2. विज्ञान ने मनुष्य को नीरोग, दीर्घजीवी और सुसंस्कृत बनाने के लिए अनगिनत साधनों की बढ़ोतरी की है। इसके लिए अनेक आविष्कार हो रहे हैं।

3. 'मनुष्य का भविष्य' जैसी बातों को लेकर स्वार्थी किस्म के लोग परेशान नहीं है। ऐसे लोग अंधाधुंध प्रकृति के मूल्यवान भंडारों की लूट मचाकर आराम और संपन्नता प्राप्त कर रहे हैं।

4. संदवेदनशील लोग मनुष्य जाति को महानाश की ओर बढ़ते देखकर विचलित हो उठते हैं।

5. साधारण सुखी लोगों में स्वार्थ की भावना पाई जाती है। वे अधिक-से-अधिक धन कमाना चाहते हैं। समाज में एक प्रतिष्ठित परिवार का दर्ज़ा पाना चाहते हैं। इसके विपरीत संवेदनशील लोग मनुष्य जाति को महानाश की ओर बढ़ते देखकर विचलित हो उठते हैं, वे परेशान हो जाते हैं। उनमें विवेक की मात्रा अधिक होती है, उनके भीतर दर्द, व्याकुलता और चिंता होती है।

ख. 1. रवि की सवारी आने से चारों ओर प्रकाश फैल जाता है और अंधेरा दूर हो जाता है।

2. बंदी और चारण सूर्य का यश गा रहे हैं।

3. सूर्य के निकलने से चारों ओर प्रकाश हो गया है, अंधकार दूर हो गया है, इसी कारण से तारों की फ़ौज मैदान छोड़कर भागी है।

4. पक्षी – खग, पखेरू
सूर्य – दिनकर, भास्कर

खंड 'ब'

ग. 1. मनुज – म् + अ + न् + उ + ज् + अ

2. सच – स् + अ + च् + अ

3. पाठ – प् + आ + ठ् + अ

4. रवि – र् + अ + ब् + इ

घ. 1. गिरिधर 2. कायर

3. उम्र

Page-80

ङ. 1. उत्तीर्ण – अनुत्तीर्ण

2. उपस्थित – अनुपस्थित

3. कीर्ति – अपकीर्ति

च. 1. अमृत – सुधा, पीयूष

2. सोम – अमृत, अमिय

3. पर्वत – पहाड़, गिरि

4. रवि – सूर्य, दिवाकर

छ. 1. आस्तिक 2. शरणार्थी

3. त्रिलोकी

ज. 1. व्यक्तित्व 2. बचपन

3. गरमी

झ. 1. पत्र – पत्ता, चिट्ठी

2. मित्र – दोस्त, सूर्य

3. ग्रहण – किसी वस्तु को लेना, राशि पर लगने वाला ग्रहण जैसे– सूर्यग्रहण, चंद्रग्रहण

ञ. 1. नीम के लेप से <u>चर्म रोग</u> में आराम

मिलता है। **अधिकरण कारक**

2. बाबा भारती अपने हाथ से खरहरा करते। **करण कारक**

3. लगाम हाथ से छूट गई।

अपादान कारक

ट. 1. पुरुषवाचक सर्वनाम (अन्य पुरुष)

2. गुणवाचक विशेषण

ठ. 1. परिमाणवाची क्रियाविशेषण

2. रीतिवाचक क्रियाविशेषण

3. संबंधवाचकबोधक

खंड 'स'

ड. 1. लेखक अपने पुत्र को किताबों में छिपा आश्चर्य और ज्ञान का खज़ाना दिखाना चाहते हैं।

2. लेखक अपने पुत्र को आकाश में उड़ते पक्षियों के रहस्य, सूर्य की रोशनी में मधुमक्खियों के निनाद तथा हरी-भरी पहाड़ियों पर खिले फूलों के बारे में चिंतन के लिए वक्त देना चाहते हैं।

3. प्रकृति के बारे में चिंतन करने से कर्तव्यबोध और चारित्रिक गुणों का विकास होता है, क्योंकि प्रकृति हमें कई रूप से शिक्षा देती है।

Page-81

ढ. 1. कविता के रचनाकार का नाम हरिवंशराय बच्चन है।

2. बरसात की हवा पेड़ों की पंक्ति से, उसकी प्रत्येक डाल से, लोनी लता के साथ खुशी से खेलती है।

3. बरसात की हवा इठलाती हुई आती है।

ण. 1. बाबा भारती ने खड़गसिंह से यह प्रार्थना की कि युक्तिपूर्वक उनका घोड़ा चुराने में कामयाब होने की घटना को वह किसी से न बताए, क्योंकि यदि लोगों को इस घटना का पता लग गया तो वे किसी दीन-दुखी पर विश्वास नहीं करेंगे।

2. असम राज्य पूर्व की ज्योति के नाम से विख्यात है। इस राज्य में वन प्रदेशों, नदियों, झरनों और सुंदर पर्वतमालाओं की संख्या अनगिनत हैं। असम की प्रमुख फ़सलें चाय, जूट, चावल, कपास तथा रेशम हैं। यहाँ की प्रमुख नदियाँ ब्रह्मपुत्र, बराक, सोनई है। यह राज्य अपनी विविध संस्कृति और हरे-भरे जंगलों के कारण जाना जाता है।

3. अब्राहम लिंकन ने अपने पुत्र के अध्यापक को पत्र इसलिए लिखा, क्योंकि वे अपने पुत्र के चारित्रिक गुणों के विकास का दायित्व उसके शिक्षक को सौंपना चाहते थे। वे जानते थे कि शिक्षक के माध्यम से ही उनका पुत्र बहादुर बन सकता है।

4. सोना एक हिरण थी। सुनहरे रंग के रेशमी लच्छों की गाँठ के समान उसका कोमल लघु शरीर था। उसका छोटा-सा मुँह और बड़ी-बड़ी पानीदार आँखें थीं जिन्हें देखकर ऐसा लगता था कि वे आँखें अभी छलक पड़ेगी। चंपक-वर्णा रूपसी के उपयुक्त सोना, सुवर्णा, सुवर्ण लेखा आदि नाम उसकी सुंदरता के कारण पड़ गया।

5. हिरोशिमा-नागासाकी में भीषण नरसंहार। अमेरिका द्वारा इन शहरों पर परमाणु बम गिराए जाने के कारण हुआ था, क्योंकि अमेरिका अपने आपको विश्व में शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में स्थापित करना चाहता था।

त. 1. प्रस्तुत कविता हमारे स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा रचित है। इसमें उन्होंने अमेरिका राष्ट्र द्वारा हिरोशिमा-नागासाकी पर परमाणु बम गिराए जाने की आलोचना की है तथा विज्ञान के सदुपयोग पर बल दिया है।

व्याख्या– कवि वैज्ञानिकों से पूछना चाहता है कि जब उन्होंने परमाणु बम का आविष्कार किया था तब उनके मन में एक पल के लिए भी अनुभव नहीं हुआ कि इस बम द्वारा नरसंहार भी किया जा सकता है। उन्होंने बम बनाया ही क्यों था। उन्हें इस सच्चाई को स्वीकारना होगा कि उनके हाथों द्वारा जो बम बनाया गया था, वह अच्छा कार्य नहीं था। विज्ञान का प्रयोग कल्याणकारी कार्यों में करना चाहिए। इस कविता का मुख्य उद्देश्य मानवतावादी दृष्टिकोण, संवेदना और करुणा जगाना है।

2. प्रस्तुत कविता 'वर्षा समीर' द्वारा ली गई है। इसमें कवि हरिवंश राय 'बच्चन' ने वर्षा ऋतु के आनंद तथा उसकी ताज़ी हवा और बारिश के पानी से मौसम बिलकुल साफ़, सुंदर और शीतल हो जाने की जानकारी देते हुए लिखते हैं–

व्याख्या– बरसाती हवा एकांत स्थान से प्रकट होती हुई नई खुशी के साथ आगे बढ़ती हुई प्रत्येक के अंग से लिपटती हुई आनंद बढ़ाती है। अर्थात वर्षा-ऋतु के मौसम में ठंडी हवा से सभी मस्त हो जाते हैं। सबका मन प्रफुल्लित हो जाता है। सभी जीव-जंतु, प्राणी, वर्षा-ऋतु का आनंद लेते हैं। यह प्रकृति प्रदत्त उपहार है जिसका सदुपयोग करना चाहिए।

थ. **शब्द** **अर्थ**

1. अर्पण – सौंपना, भेंट करना
2. सान्निध्य – पास या निकट होने की अवस्था अर्थात सामीप्य, निकटता
3. अनुत्तीर्ण – फेल

द. 1. महादेवी वर्मा का 'सोना' पाठ हमारी पाठ्यपुस्तक में है।

2. 'हार की जीत' कहानी में हारकर भी बाबा भारती जीते।

3. 'इतिहास इन्हें कभी माफ़ नहीं करेगा' इस पंक्ति में वैज्ञानिकों की तरफ़ संकेत है।

4. उज्जयंता पैलेस 1901 में महाराजा राधाकिशोर माणिक्य ने बनवाया।

5. 'हिरोशिमा की पीड़ा' कविता में अमेरिका द्वारा हिरोशिमा पर गिराए गए परमाणु बमों से हुए नरसंहार की पीड़ा का जिक्र किया गया है।

खंड 'द'

ध. विद्यार्थी स्वयं करें।

न. बी-57, हरगोबिंद एन्कलेव

आनंद विहार, दिल्ली

प्रिय मित्र हरीश

अंकल जी के पास गया था। वहाँ पर जाकर मुझे मालूम हुआ कि तुम इस बार परीक्षा में फेल हो गए। मित्र, इस बार तुम बीमार थे और कई दिनों तक विद्यालय भी नहीं गए थे। डॉक्टर ने भी तुम्हें पढ़ने से मना किया था, परंतु तुम नहीं माने और हिम्मत करके परीक्षा दे ही डाली। मित्र, मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि तुम अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहिम लिंकन से प्रेरणा ले सकते हो, जिन्होंने असफलताओं का सामना करने के बाद भी हार नहीं मानी।

मित्र, फिर से परीक्षा की तैयारी करना और

विद्यालय में सर्वोच्च स्थान पाना।

मेरी तरफ़ से बड़ों को चरणस्पर्श प्रणाम कहना तथा गुड़िया बहना को ढ़ेर सारा प्यार देना।

तुम्हारा मित्र,

अशोक गुप्ता

26-11-20XX

दिल्ली

9 इकाई-III (आमोद-प्रमोद)

चंद-खिलौना लैहों

(अभ्यास-उत्तर)

काव्य-बोध

Page-84 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. पहले पद में कृष्ण माँ से चाँद को खिलौना समझकर उसे लेने की, गाय का दूध न पीने की, ज़मीन पर लेटने की, गोद में न आने की और चोटी न गुथवाने की हठ कर रहे हैं।
2. दूसरे पद में कृष्ण माँ से अपनी चोटी बढ़ने की बात पूछ रहे हैं। वे अपनी माँ से कहते हैं कि माँ मेरी चोटी कब बढ़ेगी? मैंने कितनी बार गाय का दूध पिया है फिर भी यह आज छोटी ही है।
3. विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-84-85 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. स   2. अ

3. अ

Page-85

ख. 1. बाल कृष्ण अपनी बात मनवाने के लिए माँ से कहते हैं कि अगर उन्होंने चाँद वाला खिलौना नहीं लाकर दिया तो मैं अभी ज़मीन पर लोट जाऊँगा, तेरी गोद में न आऊँगा, न गाय का दूध पिऊँगा न चोटी गुँथवाऊँगा। मैं नंदबाबा का पुत्र बनूँगा, तेरा बेटा नहीं कहलाऊँगा।

2. माता यशोदा बाल कृष्ण को यह भुलावा देकर दूध पिला देती थीं कि दूध पीकर तुम्हारी चोटी बलराम की चोटी जितनी लंबी और मोटी हो जाएगी। कंघी करते, गूँथते तथा स्नान कराते समय यह नागिन के समान ज़मीन पर लोटने लगेगी।
3. माँ बाल कृष्ण को मक्खन-रोटी खाने के लिए नहीं देतीं। वह सिर्फ़ गाय का कच्चा दूध बार-बार पीने को देती है।
4. 'हरि-हलधर की जोटी' में बलराम व घनश्याम की जोड़ी की बात की गई है। सूरदास जी इस पद में दोनों भाइयों को दीर्घायु होने का आर्शीवाद दे रहें हैं।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. माँ, मातृ 2. गौ, धेनु
3. दुग्ध, क्षीर 4. शशि, चंद्रमा

ख. 1. चोटी- शिखर, चुटिया
2. अंबर- वस्त्र, आकाश
3. पान- (दूध) पीना, खाने वाला पान
4. हलधर- बलराम, किसान

ग. गुहैहौं-कहैहौं; जनैहौं-दैहौं; जैहौं-गैहौं; चोटी-छोटी; मोटी-लोटी; रोटी-जोटी।

Page-86

घ. 1. पुत्र 2. सुनो
3. कब 4. आओ
5 दुल्हन 6. बार
7. समझाती 8. बनकर
9. लंबी

(कौशल-परीक्षण)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।
3. विद्यार्थी स्वयं करें।

10 द बेस्ट क्लास

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-92 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. गरमी की छुट्टियाँ खत्म हो चुकी थी तथा सभी बच्चे पाँचवी कक्षा पास करके पहली बार स्कूल जा रहे थे। अतः स्कूल खुलने का पहला दिन होने की वजह से पूरा बस्ता किसी के पास भी न था। सबके हाथ में पेंसिल-बॉक्स, लंच-बॉक्स तथा एक-एक-दो-दो कॉपियाँ थीं।
2. नई कक्षा में अजब हंगामा मचा हुआ था। जैसे सब 'गरमी की छुट्टियाँ कैसे बिताईं' शीर्षक पर निबंध सुना रहे हों। तभी त्यागी सर सामने से आते दिखे। उनकी कक्षा में कदम रखते ही 'गुड मॉर्निंग सर' का शोर गूँजा। "वेरी गुड मॉर्निंग टू यू एंड ए गुड सेशन ऑलसो" कहते हुए सर ने हाज़िरी ली। शिशिर ने त्यागी सर से पूछा कि क्या इस साल भी आप हमें गणित पढ़ाएँगे? त्यागी सर के हाँ कहने पर सारी कक्षा में हलचल मच जाती है क्योंकि त्यागी सर अनुशासन के बड़े पाबंद हैं।

3. त्यागी सर बहुत स्ट्रिक्ट थे। ज़रा-सी बात पर खबर लेने लगते थे। वे अनुशासन के बड़े पाबंद थे। वे बच्चों की पढ़ाने में रुचि लेते थे। इसलिए उनकी कक्षा को 'द बेस्ट क्लास' का इनाम मिलता था।

4. नई कक्षा को त्यागी जी ने गणित का पाठ पढ़ाया। फिर उन्होंने रेखागणित के पास से परिभाषाएँ पूछनी शुरू की। जब बच्चों की तरफ से कोई उत्तर नहीं मिला तो सोचने लगे-'क्या वज़ह है कि ये बच्चे इन सवालों को इतनी जल्दी भूल गए?'

Page-92-93

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. (✓) 2. (✓)
3. (✓) 4. (✗)
5. (✓)

ख. 1. ब 2. स
3. द 4. अ

ग. 1. परविंदर अपने शिमला वाले मामा जी के घर और विनीत अपनी बुआ के घर गए थे। इन दोनों ने वहाँ बिताई गई छुट्टियों के बारे में बताया। परविंदर ने कहा कि मुझे शिमला से आने का मन नहीं कर रहा था। मुझे सोसायटी क्लब में मज़ा आता था। वहाँ पर खूब ढेर सारे बच्चे, ढेर सारे खेल और खेल का सारा सामान मिलता था। मैं वहाँ पर खूब खेलती थी, खाती थी और मौज उड़ाती थी। विनीत ने बताया कि मेरी बुआ मुझे खूब प्यार करती थी, मुझे किसी बात के लिए टोकती नहीं थी। यहाँ पर मम्मी हर समय टोका-टाकी करती है।

2. बच्चे क्लास टीचर के रूप में त्यागी सर को इसलिए पसंद नहीं करते थे क्योंकि वे बहुत स्ट्रिक्ट थे। ज़रा-सी बात पर खबर लेने लगते थे। अनुशासन के बड़े पाबंद थे। गणित के सवाल श्यामपट्ट पर लिखकर प्रत्येक छात्र को बारी-बारी से हल करने के लिए बुलाते थे। छात्र जब सवाल का हल नहीं कर पाते थे तो उन्हें समझाते भी थे। उनकी आवाज़ बुलंद थी जिससे विद्यार्थी डरकर चुप हो जाते थे।

3. त्यागी सर का सवाल था- 'शोले का गब्बर कौन था?' इसका उत्तर पूरी क्लास को पता था। उन्होंने सिनेमा से संबंधित सवाल-जवाब की छड़ी लगा दी जिसका उत्तर सवाल पूरा होने से पहले ही कक्षा के छात्र देते थे। बच्चों ने फ़िल्म के पात्रों, गीत, किसने गीत गया, फ़िल्म किस हॉल में लगी है तथा लगने वाली है उनके पास हर किस्म की सूची हाज़िर थी। कक्षा के सभी छात्रों ने फ़िल्मों के प्रति अपनी रुचि दिखाई।

4. स्कूली दिनों की अपेक्षा बच्चों को छुट्टियाँ इसलिए अधिक प्रिय थीं क्योंकि बच्चे छुट्टियों में तरह-तरह के खेल खेल सकते हैं। वे अपनी मर्ज़ी के मालिक होते हैं। इन दिनों वे अपने सभी शौक एवं इच्छाएँ पूरी करते हैं। स्कूल के गृहकार्य से बचे रहते हैं। इन दिनों न तो परीक्षा का डर रहता है, न ही किसी प्रकार की चिंता। गरमी की छुट्टियों में ही वे कहीं भी घूमने जा सकते हैं।

5. बच्चों को पढ़ाई की अपेक्षा फ़िल्मों में ज़्यादा रुचि थी इसलिए वे हर सवाल का जवाब बड़ी शीघ्रता से दे रहे थे। उनकी पढाई में रुचि कम थी या न के बराबर थी।

6. बच्चों को आजकल अधिक जानकारी फ़िल्मों की होती है क्योंकि वे खाली समय में अधिक-से-अधिक टी.वी. पर फ़िल्में देखना पसंद करते हैं।

जगह–जगह पर लगे फ़िल्मी विज्ञापनों को पढ़ते हैं, जिससे उनमें फ़िल्मों के प्रति अधिक जानकारी आ जाती है। वे लवनजनइम के माध्यम से तरह–तरह के फ़िल्मी गाने सुनते हैं, वही गाने उनके दिमाग में बैठ जाते हैं। यही कारण है कि वे फ़िल्मों से जुड़े किस्से और गीत नहीं भूलते। फ़िल्म देखते समय वे अभिनेता के संवाद, अभिनय, परिधान से अधिक प्रभावित होते हैं और उनके जैसा बनने की कोशिश करते हैं।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ–विस्तार)

अध्यापक विद्यार्थी से स्वयं करने के लिए कहें।

Page-93-94 (भाषा–ज्ञान)

क. 1. जैसे ही सूर्योदय हुआ वैसे ही सभी पक्षी अपने घोंसलों से बाहर निकल आए।

2. मोहित नहाता है और स्कूल जाता है।

3. मैंने स्कूल जाकर पढ़ाई की।

4. उस आदमी ने कल एक सौ किलो वज़न उठा लिया, जो जवान था।

5. उसने कहा और सब मान गए।

ख.

स्कूल	–	विद्यालय
पिक्चर	–	फ़िल्म
गुड मॉर्निंग	–	शुभ प्रभात
क्लास	–	कक्षा
बेस्ट	–	सबसे अच्छा
टीचर	–	अध्यापक

ग.
- कक्षा में किए गए काम को हमें पुनः दोहराना चाहिए।
- हमें अच्छे गुणों को अपनाना चाहिए।
- सरदी के मौसम में नहाने के लिए पानी गरमाना पड़ता है।
- कई राजनीतिक दल सांप्रदायिकता फैलाकर सत्ता हथियाना चाहते हैं।

घ. 1. सुबह के सात बजे थे।

2. बस कच्ची उबली सब्ज़ियाँ खाओ।

3. शिशिर ने नकल उतारी।

4. नए विद्यार्थियों का स्वागत किया।

5. कुरसी की पीठ पर सिर टिकाकर आँखें मूँद लीं।

Page-95

(कौशल–परीक्षण)

1. अध्यापक विद्यार्थी से स्वयं करने के लिए कहें।
2. अध्यापक विद्यार्थी से स्वयं करने के लिए कहें।
3.
   - हमें अपने लक्ष्य में सफल होने के लिए अत्यधिक मेहनत करनी चाहिए। जिससे हम अपने लक्ष्य में आगे बढ़ सकें।
   - हमें हर काम धैर्य और लगन के साथ करना चाहिए।
   - लक्ष्य की सफलता के लिए आत्मविश्वास का होना ज़रूरी होता है।
   - हमें अपने समय को कभी व्यर्थ नहीं करना चाहिए तथा हर काम को टाइम–टेबल के अनुसार करना चाहिए।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. अध्यापक विद्यार्थी से स्वयं करने के लिए कहें।
2. अध्यापक विद्यार्थी से स्वयं करने के लिए कहें।
3. अध्यापक विद्यार्थी से स्वयं करने के लिए कहें।
4. अध्यापक विद्यार्थी से स्वयं करने के लिए कहें।

11 ज्योतिषी का एक दिन

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-101 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. ज्योतिषी के माथे पर बहुत-सी भभूत और थोड़ा-सा सिंदूर लगा रहता था। वह सिर पर गेरुए रंग की पगड़ी पहनता था।
2. ज्योतिषी की दुकान टाउन हॉल के पार्क से लगे रास्ते पर इमली के वृक्ष के नीचे स्थित थी।
3. ज्योतिषी उस ग्राहक का नाम इसलिए जानता था क्योंकि कभी उसी ने उसे मारकर तथा उसे मरा समझकर कुएँ में फेंक दिया था।
4. ग्राहक को इस बात का संतोष हुआ कि जिस आदमी ने उसे मारकर कुएँ में फेंक दिया था वह आदमी लारी से कुचलकर मरा।

Page-101-102 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. अ 2. अ

3. ब

ख. 1. ज्योतिषी बातें करने में कुशल था, जो लोगों को खूब पसंद आती थीं। इसलिए अनुमान और अभ्यास से इस कार्य में उसने महारत हासिल कर ली थी। यही कारण था कि ज्योतिष विद्या की जानकारी न होने पर भी वह अपना धंधा चला पाता था। वह हर सवाल का आठ आना वसूल करता और तब तक मुँह नहीं खोलता था जब तक दूसरा कम-से-कम दस मिनट तक अपनी बात कह नहीं देता। इससे उसे दस जवाब और सूझ जाते। तब वह ग्राहक की हथेली देखकर कहता कि तुम्हें अपने कामों का पूरा नतीजा नहीं मिल रहा है। दस में से नौ लोग उसकी बात से एकदम सहमत हो जाते।

2. ज्योतिषी ने ग्राहक की हथेली देखकर कहा कि तुम्हें मरा समझकर छोड़ दिया गया था। इसके बाद तुम्हें खेत के बगल में बने एक कुएँ में फेंक दिया गया था। मारने वाले ने सोचा कि तुम मर चुके हो। आगे उसने ग्राहक को बताया कि वह व्यक्ति तुम्हें अब परलोक में ही मिलेगा। चार महीने पहले दूर एक गाँव में उसकी मौत हो चुकी है। अब तुम उसे कभी नहीं देख सकोगे। ज्योतिषी ने ग्राहक का नाम गुरुनायक बताया तो वह आश्चर्यचकित हो गया। ज्योतिषी ने ग्राहक को बताया कि उसका घर दो दिन की दूरी पर है, उत्तर की तरफ़। पहली गाड़ी पकड़कर वापस लौट जाओ। अगर तुम घर नहीं गए तो तुम्हारी ज़िंदगी में एक और भंयकर खतरा दिख रहा है। यह कहकर उसने ज़रा-सी राख उठाई और ग्राहक को देते हुए कहा 'इसे माथे पर मल लो और घर लौट जाओ। दक्षिण दिशा तुम्हारे लिए खतरनाक है, इधर कभी मत आना। ऐसा करोगे तो सौ साल की उमर पाओगे, नही तो ......।'

3. 'आज मेरे सिर से बहुत बड़ा बोझ उतर गया।' ज्योतिषी ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि जिस आदमी को उसने मारा था तथा जिसकी डर की वजह से वह घर छोड़कर कहीं और रह

रहा था, वह आदमी ज़िंदा था। अब उसका डर खत्म हो गया था।

4. इस कहानी का संदेश यह है कि हमें भाग्य के सहारे न बैठकर कर्म करते रहना चाहिए तथा अंधविश्वास का साथ न देकर उसका विरोध करना चाहिए। इस झूठी आस्था पर विश्वास रखने वालों को ज्योतिषी बेवकूफ बनाते हैं तथा धन लूटते हैं।

5. कहानी के पात्र 'ज्योतिषी' का चरित्र-चित्रण इस प्रकार है–

   दर्जन भर कौड़ियों, कपड़े का चौकोर टुकड़ा, जिस पर कई रहस्यमय रेखाएँ खिंची थीं, एक नोटबुक तथा ताड़पत्रों की एक किताब लेकर ज्योतिषी टाउन हॉल के पार्क से लगे रास्ते पर इमली के विशाल वृक्ष के नीचे छाया में ठीक दोपहर के समय अपनी दुकान लगाता था। उसके माथे पर बहुत-सी भभूत तथा थोड़ा-सा सिंदूर लगा होता था। आँखों से एक तिरछी चमक यह देखने के लिए निकलती थी कि ग्राहक उसकी ओर आ रहे हैं या नहीं। उसके माथे पर लगा प्रभावी तिलक और नीचे गालों तक फैली बड़ी काली मूँछों के बीच दमकती दो आँखें, किसी अल्प बुद्धि के लिए भी कारगर सिद्ध होती थीं। प्रभाव जमाने के लिए वह सिर पर गेरुए रंग की पगड़ी भी पहनता था। उसे न तो सितारों की जानकारी थी, न उन बेचारे लोगों की, जो उसके ग्राहक बनते। बातें करने में वह बहुत कुशल था।।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क.	1.	लोचन, नयन	2.	पुष्प, सुमन
	3.	वस्त्र, पट	4.	अग्नि, पावक
	5.	गृह, आलय	6.	मानव, आदमी
ख.	1.	रूसी	2.	रसीला
	3.	दैनिक	4.	वार्षिक
	5.	चीनी	6.	हरा
	7.	प्यासा	8.	ज्ञानी

Page-103

ग. 1. निश्चयवाचक सर्वनाम
2. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
3. पुरुषवाचक सर्वनाम
4. निजवाचक सर्वनाम
5. पुरुषवाचक सर्वनाम
6. निश्चयवाचक सर्वनाम

घ.	1.	क्रेता	2.	कम
	3.	लचीला	4.	मरा
	5.	असंतोष	6.	अशांत

(कौशल-परीक्षण)

1. मैं भाग्य की अपेक्षा कर्मशक्ति पर विश्वास करता हूँ/करती हूँ। हमारा व्यक्तित्व हमारे विचारों का ही प्रतिबिंब है। कर्मठ व्यक्ति अपने चारों ओर आशा, उत्साह एवं सौहार्द का वातावरण बना लेते हैं और परस्पर आशा एवं प्रगति का संदेश देते हैं। वे अपने साथ-साथ दूसरों को भी नवीन ज्योति देते हैं और सच्चे अर्थों में जीवन के पारखी होते हैं। किंतु भाग्यवादी व्यक्ति सदैव निराशा में ही डूबे रहते हैं। वे दूसरों को भी निरुत्साहित करते हैं एवं गिरी हुई बातें कहकर भाग्य को दोष देते हैं। किंतु कर्मशक्ति पर

विश्वास रखने वाले व्यक्ति की प्रसन्नता की किरणें वातावरण को भी सजीव एवं मुखरित कर देती हैं। ऐसे व्यक्ति से मिलकर उत्साह का अनुभव प्राप्त होता है।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. ज्योतिषी जैसे लोगों से समाज को सावधान एवं सतर्क करने के लिए आवश्यक है कि सभी को सत्य से अवगत कराया जाए। वास्तविकता यह है कि ज्योतिषियों द्वारा बताई गई बातें प्रामाणिक नहीं होती हैं किंतु फिर भी लोग उन पर पूर्णत: विश्वास करके वैसा ही करते हैं, जैसा वे उन्हें बताते हैं। प्राय: अशिक्षित लोग ज्योतिषियों की बातों में अधिक आते हैं और उनके द्वारा बोली गई प्रत्येक बात ऐसे लोग पत्थर की लकीर समझते हैं। इसलिए आवश्यक है कि ऐसे लोगों को जागरूक तथा शिक्षा के माध्यम से शिक्षित किया जाए। धर्म और आस्था के नाम पर आए दिन लोग ठगे जाते हैं। लोग समझते हैं कि उनकी समस्याओं का निवारण ज्योतिषियों द्वारा हो सकता है किंतु अपनी समस्याएँ व्यक्ति स्वयं ही दूर कर सकता है। इसलिए आवश्यक है कि स्वयं उनका समाधान निकाला जाए न कि ऐसे लोगों की जेबें भरी जाएँ। अत: हमें ऐसे व्यक्तियों की बातों में न आकर अपना कर्म करते रहने चाहिए।
3. विद्यार्थी स्वयं करें।

12 लखनऊ की गोभी

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-109 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. रामसागर जी हर साग-सब्ज़ी को जब खरीदकर लाते थे तब हरे धनिए की गड्डी मुफ़्त में माँगना, शलजम के पत्ते तुड़वाकर तुलवाने का आग्रह करना, आलू छाँट-छाँटकर चढ़वाना और अरवी धुलवाकर मिट्टी हटाकर लेना आदि उनके तरीके थे।
2. लेखक ने प्लेटफ़ॉर्म पर अपनी स्थिति के बारे में बताया कि प्लेटफ़ॉर्म पर हाथ में एक खूबसूरत अटैची के साथ एक झाबा गोभी के फूल लेकर सफ़र करने वाला मैं अपने ढंग का अकेला ही मुसाफ़िर दिखाई पड़ रहा था। टिकट चैकर दो बार पास से गुज़रा, कुली से पूछा गया कि सामान बुक करवा लिया है या नहीं। दो-एक परिचित चेहरे भी दिखाई पड़े। बोले, ''कहिए, दावत कब है?''
3. लेखक और कुली के बीच में बहस छिड़ गई थी। कुली इनाम माँगने पर अटका हुआ था और लेखक गिरी हुई गोभी के दाम पर। दोनों के बीच आपस में तू-तू, मैं-मैं होने लगी, दोनों ही अपनी-अपनी भाषा में एक-दूसरे को ऊँच-नीच कह रहे थे। लेकिन लेखक भी अपनी ज़िद पर अड़ा था। वह कुली को एक रुपया इनाम देना नहीं चाहता था।

4. गाड़ी के भीतर का दृश्य भी निराला था। एक स्वर कहता था, ''साहब, उधर ले जाएँ न!'' दूसरा कह रहा था, ''बैंच के नीचे कर लीजिए।'' तीसरा ऊपर रखने का सुझाव दे रहा था। पर कोई भी अपनी जगह से तिल-भर भी हिलने को तैयार नहीं था। लेखक का अकेला स्वर डिब्बा खुलते ही सुनाई पड़ता था, 'बचाइएगा' ,'देखिएगा', 'अरे-अरे इधर नहीं, इधर गोभी है।', 'अरे ट्रंक उधर ले जाओ'... पर जब आदमी 'जनता' हो जाता है, तो कौन किसकी सुनता है, सो उसकी भी किसी ने न सुनी।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. ✕ 2. ✓
3. ✕ 4. ✕
5. ✓

Page-110

ख. 1. रामसागर जी ने लेखक से।
2. परिचित चेहरों ने लेखक से।

ग. 1. इलाहाबाद स्टेशन आने तक भीड़ गोभी के फूल के झाबे पर छाई रही थी। गोभी के गठे हुए पत्तेदार फूल जनता की इतनी लातें सह चुके थे कि हारे हुए उम्मीदवार की तरह उन्हें पहचानना कठिन लग रहा था। लेखक बचे हुए गोभी के फूल को रामसागर तक पहुँचाकर मालूम करना चाहता था कि इनमें अब कितने विटामिन शेष बचे हैं, लेकिन उसकी हिम्मत नहीं पड़ी।

2. रामसागर जी को हरी सब्ज़ी का मर्ज़ था। वह हर सब्ज़ी के बारे में जानते थे कि किस सब्ज़ी में कितने विटामिन होते हैं, कितना लोहा, कितना चूना, कितना कत्था, कितनी ईंट... इसका जितना ज्ञान उनको था, वैसा किसी पोस्टमास्टर को अब तक निकले हुए डाक-टिकटों के बारे में भी नहीं होगा। वे किसी को कहीं बाहर आते-जाते देखते थे, तो मौसमी तरकारी की फ़रमाइश ज़रूर कर देते थे।

3. गोभी के फूल लाने में लेखक को कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा जैसे कि गाड़ी में मारामारी का दृश्य, कुछ लोग डिब्बे से बाहर निकलने का प्रयत्न कर रहे थे और कुछ चढ़ने का। स्टेशनों पर गाड़ी रुकती रही और लोग डिब्बे में सबके मना करने पर भी उसी तरह घुसते रहे, जिस तरह लेखक घुसा था। लेखक का अकेला स्वर डिब्बा खुलते ही सुनाई पड़ता था, बचाइएगा, देखिएगा, अरे-अरे, इधर गोभी है पर उनकी आवाज़ कोई नहीं सुनता था।

4. रामसागर ने लेखक को गोभी के फूल के बारे में समझाते हुए कहा –'देखिए वर्मा जी, पता नहीं आपने कभी साग-सब्ज़ी खरीदी है कि नहीं। फूल ज़रा गठा हुआ लीजिएगा। छितरा फूल ज़ल्दी खराब हो जाता है। बहुत-से गोभीवाले पत्ते निकाल लेते हैं, वे पत्ते न निकाल पाएँ, पूरी गोभी लीजिएगा। पत्ते में जो 'कैलोरी' होती है वह फूल में तो होती ही नहीं। पत्तों के डंठल का अचार बहुत अच्छा होता है। फूल में कभी-कभी छोटे-छोटे कीड़े लग जाते हैं, उसे ज़रा झड़वा के लीजिएगा। पानी में भीगा फूल मत लीजिएगा। वह बड़ी जल्दी खराब हो जाता है।

5. लेखक निस्स्वार्थ की भावना से हमेशा सबकी मदद करने के लिए तैयार रहते थे। चाहे उसके लिए कितनी ही कठिनाई क्यों न झेलनी पड़े। वे किसी बात को ध्यान से सुनते हैं तथा उनमें सामने वाले की बात को सुनने की सहनशक्ति भी है। लेखक दूसरों को सम्मान देते हैं तथा उनमें विनम्रता का भाव है। वे किसी काम को मना नहीं करते हैं।।

घ. 1. रामसागर जी को हरी सब्ज़ियों का मर्ज़ है।

2. रामसागर जी की तुलना पोस्टमास्टर से इसलिए की गई क्योंकि जितना ज्ञान रामसागर जी को हरी सब्ज़ियों के बारे में था, उतना ज्ञान पोस्टमास्टर को भी अब तक निकले अपनी डाक-टिकटों के बारे में नहीं होता होगा।

3. एक टोकरा सोया-मेथी का साग भेंट करके रामसागर जी का पक्का मित्र बना जा सकता है।

4. वे अकसर लोगों से तरकारी की फरमाइश करते हैं।

(श्रुतलेख)

विद्‍यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

1. विद्‍यार्थी स्वयं करें।
2. विद्‍यार्थी स्वयं करें।

Page-111

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. सऊदी में अरबी भाषा बोली जाती है।
अरवी मुख्य रूप से सब्ज़ी बनाने के काम में आती है।

2. हिमालय गिरि बहुत ऊँचा है।
हमें गिरी हुई चीज़ों को उठाना नहीं चाहिए।

3. राहुल के आचार-विचार अपने मित्रों के प्रति काफी अच्छे हैं।
नीबू आदि का अचार – आम का अचार खाने में बहुत स्वादिष्ट होता है।

ख. गाड़ी के भीतर का दृश्य भी निराला था। एक स्वर कहता था, ''साहब, उधर ले जाएँ न!'' दूसरा बोला, ''बैंच के नीचे कर लीजिए!" तीसरा ऊपर रखने का सुझाव देता। पर कोई भी अपनी जगह से तिल-भर भी हिलने को तैयार न था। 'गोभी का झाबा' वहीं नीचे पड़ा रहा। स्टेशनों पर गाड़ी रुकती रही और लोग डिब्बे में सबके मना करने पर भी उसी तरह घुसते रहे, जिस तरह मैं घुसा था। मेरा अकेला स्वर डिब्बा खुलते ही मुझे सुनाई पड़ता था, ''बचाइएगा'', ''देखिएगा'', ''अरे-अरे इधर नहीं, इधर गोभी है।'', ''अरे ट्रंक उधर ले जाओ''... पर जब आदमी 'जनता' हो जाता है, तो कौन किसकी सुनता है। सो मेरी भी किसी ने सुनी।

ग. 1. अध्यापिका कक्षा में पढ़ा रही हैं।
2. मयंक ने क्रिकेट मैच जीत लिया।
3. कल मेरे मामा आए थे।
4. माताजी ने खाना नहीं बनाया।

घ.

विशेषण	**विशेष्य**
सस्ती	तरकारी
आखिरी	किस्त
दूसरा	डिब्बा
परिचित	चेहरे
खूबसूरत	अटैची
अच्छा	फूल

Page-112

ङ. 1. निर्गुण 2. अत्यधिक
3. सहपाठी 4. उत्थान

(कौशल-परीक्षण)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. **संवाद**

गोभी का पहला फूल

आज तो रेलगाड़ी में हमारा कचूमर ही निकल जाएगा।

गोभी का दूसरा फूल

भाई, तुम बिलकुल ठीक कह रहे हो, ये लोग तो हमें चैन से जीने ही नहीं देते।

गोभी का पहला फूल

खेतों में लगे हुए हम कितने खुश थे। खुली जगह, ताज़ी हवा तथा किसान हमें पीने के लिए समय-समय पर पानी भी दे दिया करता था।

गोभी का दूसरा फूल

सही कहा भाई, और यहाँ रेलगाड़ी में साँस लेने तक की जगह नहीं। इतनी भीड़ है यहाँ पर।

गोभी का पहला फूल

माना कि लोग हमारी सब्ज़ी बनाकर खाते हैं तथा उन्हें हमसे विटामिन भी मिलते हैं पर इस तरह से हमें कुचलकर नष्ट तो न करें।

गोभी का दूसरा फूल

सही कहा भाई, किसान की मेहनत भी कितनी बरबाद करते हैं लोग।

सुझावित आवधिक प्रश्न-पत्र-2

खंड 'अ'

Page-114

क. 1. हिंदुस्तान के प्रधानमंत्री का पद कठिन इसलिए है क्योंकि यह देश भयानक कठिनाइयों से भरा है। ये कठिनाइयाँ ही उसके प्रधानमंत्री के पद को कठिन बना देती है।

2. इस देश का नेतृत्व केवल वही व्यक्ति सँभाल सकता है, जिसमें कम-से-कम चौदह घंटों तक डटकर काम करने की क्षमता हो।

3. इस अनुच्छेद में प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री की चर्चा है।

4. डॉक्टरों ने काम कम करने का परामर्श दिया था।

खंड 'ब'

ख. 1. **शुद्ध वाक्य–** तुम हमारा काम करो।

2. **शुद्ध वाक्य–** बच्चे जा रहे हैं।

3. **शुद्ध वाक्य–** शिक्षक पढ़ा रहे हैं।

ग. 1. शर्म – शर्माना

गरम – गरमाना

लालच – ललचाना

घ. 1. उत्तम पुरुष सर्वनाम

2. निश्चयवाचक सर्वनाम

3. अनिश्चितवाचक सर्वनाम

ङ. **आचार – आचरण**

श्यामा का आचार-विचार अपनी सहेलियों के प्रति अच्छा है।

अचार – आम या नीबू आदि का अचार

मुझे आम का अचार खाना पसंद है।

गिरि – पर्वत

सभी देवियों का मंदिर गिरि पर है।

गिरी – गिरने की क्रिया

वह पैर फिसलने के कारण कीचड़ में गिरी।

अरबी – एक सब्ज़ी

अरबी की सब्ज़ी खाने में स्वादिष्ट लगती है।

च. 1. उसने कहा, "मेरा घर दूर है।"

2. नेहा, सीमा, अनुराधा और प्रियंका अच्छी सहेलियाँ हैं।

3. आप कहाँ गए थे?

खंड 'स'

Page-115

छ. 1. नई कक्षा में अजब हंगामा मचा हुआ था। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे मानो सभी विद्यार्थी 'गरमी की छुट्टियाँ कैसे बिताई' शीर्षक पर अपने-निबंध सुना रहे हो या उन्होंने अपनी छुट्टियाँ कैसे मनाई उस पर चर्चा कर रहे थे, तभी त्यागी सर सामने से आते दिखे। उनके कक्षा में कदम रखते ही 'गुड मॉर्निंग सर' का शोर गूँजा। "वैरी गुड मॉर्निंग टू यू एंड ए गुड सेशन ऑलसो" कहते हुए सर ने हाज़िरी ली।

2. प्रार्थना के बाद प्रिंसिपल सर ने सबको शुभकामनाएँ दीं। अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों को मेहनत करने की सलाह दी और नए विद्यार्थियों का स्वागत किया।

3. पहली कक्षा त्यागी सर लेने वाले थे।

4. शिशिर ने त्यागी सर से पूछा कि इस साल भी आप ही हमें गणित पढ़ाएँगे।

ज. 1. अ 2. स

3. ब 4. अ

5. ब

झ. **प्रसंग–** सूरदास के इस पद में बालकृष्ण अपनी माँ से पूछते हैं कि उनकी चोटी कब बढ़ेंगी? इसी वार्तालाप को उन्होंने अपने इस पद में व्यक्त किया है। वे कहते हैं–

व्याख्या– माँ! मेरी चोटी कब बढ़ेंगी? आपके कहने के अनुसार मैंने कितनी बार दूध पिया है। लेकिन मेरी चोटी वैसे-की-वैसी ही है। अर्थात यह आज भी छोटी है। माँ, तुम तो कहती हो कि दूध पीने से मेरी चोटी बलराम की चोटी जैसी लंबी और मोटी हो जाएगी। चोटी को सँवारने या गूथने नहाने से वह नागिन के समान भूमि पर लौटेगी। तुम मुझे बार-बार कच्चा दूध पीने को देती हो। माखन-रोटी तो खाने को मुझे देती नहीं हो।

यशोदा माँ और बालकृष्ण के सवाद को सुनकर सूरदास जी दोनों भाइयों अर्थात कृष्ण और बलराम को दीर्घायु होने का आशीर्वाद देते हैं।

विशेष–इस पद में वात्सल्य और प्रेम का वर्णन है। जीवन में माँ का महत्वपूर्ण स्थान है। देवताओं ने भी माँ का गुणगान किया है।

ञ. 1. बालकृष्ण अपनी बात मनवाने के लिए माँ से कहते हैं कि अगर उन्होंने चाँद वाला खिलौना नहीं लाकर दिया तो मैं अभी ज़मीन पर लोट जाऊँगा, तेरी गोद में न आऊँगा, न गाय का दूध पिऊँगा, न चोटी गुँथवाऊँगा। मैं नंदबाबा का पुत्र बनूँगा, तेरा बेटा नहीं कहलाऊँगा।

2. "आज मेरे सिर से बहुत बड़ा बोझ उतर गया।" ज्योतिषी ने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि जिस आदमी को उसने

मारा था तथा जिसकी वजह से घर छोड़कर भागा था और तुमसे शादी करके यहाँ रहने लगा था। वह आदमी ज़िंदा है।

3. त्यागी सर द्वारा पूछे गए हर सवाल का जवाब शीघ्रता से मिलने का कारण यह था कि बच्चों को पढ़ाई की अपेक्षा फ़िल्मों में ज़्यादा रूचि थी।

4. यशोदा माँ बाल कृष्ण को यह भुलावा देकर दूध पिला देती थीं कि दूध पीकर तुम्हारी चोटी बलराम की चोटी जितनी लंबी और मोटी हो जाएगी। कंघी करते, गूँघते तथा स्नान कराते समय यह नागिन के समान ज़मीन पर लोटने लगेगी।

5. रामसागर जी को हरी सब्ज़ी का मर्ज़ था। वह हर सब्ज़ी के बारे में जानते थे कि किस सब्ज़ी में कितने विटामिन होते हैं, कितना लोहा, कितना चूना, कितना कत्था, कितनी ईंट. .. इसका जितना ज्ञान उनको था, डाक-टिकटों के बारे में नहीं होगा।

खंड 'द'

ट. 1. साइकिल खो जाने पर पुलिस अधीक्षक को पत्र

सेवा में,

पुलिस अधीक्षक

कमला नगर,

दिल्ली

विषय : साइकिल खो जाने हेतु पत्र

महोदय,

निवेदन है कि मेरी काले रंग की हीरो साइकिल घर के बाहर से चोरी हो गई। उस समय मैं घर में था। इस साइकिल को मेरे चाचा जी ने उपहारस्वरूप दी थी तथा इसके रहने से मुझे आने-जाने में काफी सुविधा रहती थी। आपसे अनुरोध करता हूँ कि मेरी साइकिल का जल्दी से जल्दी पता लगाएँ।

धन्यवाद!

भवदीय

अरूण शर्मा

38/कमला नगर, दिल्ली

दिनांक : 26-11-20XX

मोबाइल नं॰ 987..............................

ठ. प्रकाश : भाई! बैगन कैसे दिए?

सब्ज़ीवाला : 50 रुपए किलो

प्रकाश : क्या! (आश्चर्य से)

सब्ज़ीवाला : 50 रुपए किलो!

प्रकाश : इतना मँहगा क्यों?

सब्ज़ीवाला : क्या बताएँ साहब! सब्ज़ी पीछे से महँगी आती है।

प्रकाश : पीछे से क्या मतलब।

सब्ज़ीवाला : मंडी से

प्रकाश : अब तुम ही बताओ! क्या खाएँ!

सब्ज़ीवाला : साहब! हमें मँहगा बेचने का शौक नहीं। आप कहीं भी पता कीजिए। सब जगह यही भाव है।

13

इकाई-IV (प्रखर)

मैं सबसे छोटी होऊँ

(अभ्यास-उत्तर)

काव्य-बोध

Page-118 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. बिटिया छोटी बनकर माँ की गोद में सोना चाहती है। उसका स्नेह पाना चाहती है। वह हमेशा अपनी माँ का आँचल पकड़कर घूमना-फिरना चाहती है। वह अपनी माँ का हाथ छोड़ना नहीं चाहती है।

2. बड़ा होने के बाद माँ हमारे आत्मनिर्भर होने के कारण अपने हाथों से हमारे काम नहीं करती। वे दूसरे घर के कार्य करवाती हैं। बड़े होने पर बड़े कार्य करने के लिए प्रेरित करते हुए मार्गदर्शन करती है। वह डाँट-फटकार कर सकती हैं। उनके स्नेह में थोड़ी सख्ती आ जाती है। माँ, बच्चे के बड़े हो जाने पर न तो गोदी में बिठा सकती हैं, न ही परियों की कहानी सुना सकती है। वे स्वयं ही पढ़ने के लिए कहती हैं। इस प्रकार से वह हमें छलती है।

3. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करने के लिए कहें।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. ब 2. स

Page-119

ख. 1. प्रस्तुत कविता का शीर्षक है-'मैं सबसे छोटी होऊँ'

2. यह कविता 'सुमित्रानंदन पंत' ने लिखी है।

3. इस कविता में बिटिया बड़ी नहीं बनना चाहती।

4. बड़ी होने पर बच्ची को लगता है कि उसकी माँ अब उसको उतना समय नहीं दे पा रही है, जितना पहले दिया करती थी। बचपन में उसकी माँ उसे विभिन्न तरह की कहानियाँ सुनाया करती थी। उसके साथ हमेशा खेला करती थी। यह सभी शिकायतें बच्ची अपनी माँ से करती है।

5. इस कविता में बच्ची हमेशा छोटी रहकर माँ के साथ रहना चाहती है, जिससे वह सदैव माँ का प्यार-दुलार पा सके। बड़ी बनकर वह माँ के प्यार को खोना नहीं चाहती। इसलिए इस कविता में 'ऐसी बड़ी न होऊँ मैं' की कामना की गई है।

ग. 1. प्रस्तुत पंक्तियों का आशय है कि माँ हमें खिलौने थमा देती है और वह अब हमारे साथ नहीं खेलती, हमें परियों की कहानी नहीं सुनाती, जैसे कि बचपन में सुनाया करती थी।

2. प्रस्तुत पंक्तियों का आशय है कि बच्चों को चाँद को उदित होते देखना अत्यंत रोचक लगता है। वे अकसर माता-पिता से चाँद को देखने या उसे हाथ में लेने की ज़िद करते हैं इसलिए कविता में कवि ने चंद्रोदय दिखाने की बात कही है।

चंद्रोदय का दृश्य अत्यंत सुहाना लगता है। चाँदनी रात बहुत ही शीतल लगती है, जो आँखों और हृदय को ठंडक पहुँचाती है।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. माता, जननी 2. अंग, तन

3. कर, हस्त 4. चंद्र, शशि

ख. 1. बड़ा 2. जागना

3. छाँव 4. दुखद

5. भयभीत

Page-120

ग. पुनरावृत्ति – ठीक-ठीक, दो-दो

समानार्थी शब्द – काम-काज, डाँट-फटकार

विलोम शब्द – दो-एक, ऊँच-नीच

सार्थक-निरर्थक शब्द– चाय-वाय, मिठाई-शिठाई

घ. छोटी - गोदी, साथ - हाथ,

मुख - सुख निर्भय - चंद्रोदय,

खिला - मिला, फिरती - गिरती

(कौशल-परीक्षण)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. प्रस्तुत कविता में माँ अपने बच्चे को गोदी में सुलाती है, सदा अपने आँचल के साए में उसे रखती है। खाना, नहलाना, धुलाना, सजाना-सँवारना और परियों की कहानियाँ सुनाना आदि कार्य वह अपने बच्चे के लिए करती है। हम बच्चों का भी कर्तव्य होना चाहिए कि हम अपने माता-पिता की हर बात को ध्यानपूर्वक सुनें और उस पर अमल भी करें। छोटी-छोटी बातों से उन्हें परेशान न करें। हम ऐसा कोई कार्य न करें जिससे उन्हें किसी भी प्रकार का कोई दुख पहुँचे।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. माँ वह है, जो हमें जन्म देती है। हमारी ज़िंदगी की सबसे पहली गुरु हमारी माँ होती है। हमारी परवरिश में हमारी माँ का बहुत बड़ा योगदान होता है। हमारी माँ हमारे सभी सुख-दुख का ध्यान रखती है। वह हमारी हर छोटी-बड़ी जरूरतों को पूरा करती है। सुबह के समय वह बहुत प्यार से हमें बिस्तर से उठाती है और रात के समय वह प्यारे सपनों के साथ कहानियाँ सुनाकर सुलाती है। हमारी माँ हमें स्कूल जाने के लिए तैयार होने में मदद करती है और हमारे लिए सुबह का नाश्ता और दोपहर का खाना भी बना कर देती है। साथ ही वह हमारे स्कूल होमवर्क में भी मदद करती है। वह हमेशा सही राह पर आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शन करती है और जीवन में सही कार्य करने को प्रेरित करती है। वह सदा हमें अनुशासन का पालन करना, अच्छा व्यवहार करना और देश, समाज, परिवार के लिए हमारी ज़िम्मेदारी और भूमिका को समझाती है।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

3. कविता (माँ)

घुटनों से रेंगते-रेंगते
कब पैरों पर खड़ा हुआ,
तेरी ममता की छाँव में,
जाने कब बड़ा हुआ...
काला टीका दूध मलाई
आज भी सब कुछ वैसा है,
मैं ही मैं हूँ हर जगह,
माँ प्यार ये तेरा कैसा है?
सीधा-सादा, भोला-भाला,
मैं ही सबसे अच्छा हूँ,
कितना भी हो जाऊँ बड़ा,
'माँ!' मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।,
'माँ!' मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।

4. विद्यार्थी स्वयं करें।

14 मेरी जननी

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-125 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. प्रस्तुत रचना का शीर्षक 'मेरी जननी' में लेखक ने अपनी माता तथा सभी की माता अर्थात मातृभूमि की भूमिका का वर्णन किया है कि किस प्रकार एक माता अपने बालक को सत्य का समर्थन करने तथा ऐसे किसी भी काम से दूर रहने को प्रेरित करती है, जो देश या धर्म के विरुद्ध हो। हमारा अपने देश तथा माता के प्रति प्रेम सदैव बना रहना चाहिए। एक माँ ही अपने बच्चे के भीतर संस्कार, निडरता, वीरता तथा दृढ़ संकल्प के भाव जाग्रत करती है। इसलिए माँ की भूमिका प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में बहुत अहम होती है। बिस्मिल जी की माता ने उन्हें अपनी मातृभूमि के लिए सर्वस्व न्योछावर करने के लिए सदैव प्रेरित किया। प्रत्येक बच्चे के भीतर उसकी माता देश-प्रेम, सत्यनिष्ठा, प्राणी मात्र के प्रति दया जैसे गुणों को प्रस्फुटित करती है। अत: हमें अपनी माँ तथा मातृभूमि दोनों का सम्मान करना चाहिए।
2. बिस्मिल की माता जी का विवाह ग्यारह वर्ष की उम्र में हो गया था। वे एक ग्रामीण कन्या थीं। उस समय लड़की की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता था जिसके कारण बिस्मिल की माता जी अशिक्षित थीं। अपनी कुछ शिक्षित सखी-सहेलियों के माध्यम से उन्होंने अक्षर बोध किया। बिस्मिल के जन्म के पाँच या सात वर्ष बाद उनकी माता जी ने हिंदी पढ़ना आरंभ किया। मुहल्ले की उनकी जो सखी-सहेलियाँ घर आया करती थीं, उन्हीं में कुछ शिक्षित स्त्रियों के माध्यम से वे अक्षर बोध करती थीं। घर का काम खत्म होने के बाद वे पढ़ना-लिखना करती थीं।
3. बिस्मिल को अपनी माता जी के आदेश के कारण अपनी प्रतिज्ञा भंग करनी पड़ी क्योंकि उनकी माता जी ने कहा था कि कोई भी ऐसा कार्य न करना जिससे किसी की प्राण-हानि हो। उन्होंने यहाँ तक कहा था कि अपने शत्रु को कभी प्राणदंड न देना।
4. बिस्मिल अपनी माँ का आभार प्रकट करने के लिए कहते हैं कि इस जन्म में तो क्या, यदि मैं अनेक जन्मों में भी सारे जीवन प्रयत्न करूँ तो भी तुमसे उऋण नहीं हो सकता। तुम्हारी दया से ही मैं देश-सेवा में संलग्न हो सका हूँ। धार्मिक जीवन में भी मुझे तुम्हारे ही प्रोत्साहन ने सहायता की। जो कुछ शिक्षा भी मैंने ग्रहण की, उसका श्रेय भी तुम्हीं को जाता है। जिस मनोहर रूप से तुम मुझे उपदेश दिया करती थीं, उसका स्मरण कर तुम्हारी मंगलमयी मूर्ति का ध्यान आ जाता है और मस्तक झुक जाता है। तुमने इस शरीर को जन्म देकर केवल पालन-पोषण ही नहीं किया बल्कि आत्मिक, धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति में तुम्हीं मेरी सदैव सहायक रहीं। जन्म-जन्मांतर परमात्मा ऐसी ही माता दें।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. स 2. द

ख. 1. बिस्मिल ने वकालतनामे पर हस्ताक्षर इसलिए नहीं किए क्योंकि यह धर्म विरुद्ध था और वह यह पाप नहीं करना चाहते थे। इससे उनकी इस चारित्रिक विशेषता का बोध होता है कि वे सदैव सत्य का समर्थन करते

थे। अपने विचारों पर दृढ़ रहते थे तथा किसी भी प्रभावशाली व्यक्ति के सामने झुकते या डरते नहीं थे।

2. बिस्मिल की माता जी अशिक्षित थीं। अपनी कुछ शिक्षित सखी–सहेलियों के माध्यम से उन्होंने अक्षर बोध किया। बिस्मिल के जन्म होने के पाँच या सात वर्ष बाद उनकी माता जी ने हिंदी पढ़ना आरंभ किया। पढ़ने का शौक उन्हें खुद से ही था। मुहल्ले की उनकी जो सखी–सहेलियाँ घर आया करती थीं, उन्हीं में कुछ शिक्षित स्त्रियों के माध्यम से वे अक्षर बोध करती थीं। घर का काम खत्म होने के बाद वे पढ़ना–लिखना करती थीं। वे मेहनती थीं जिसके परिणामस्वरूप थोड़े दिनों मे ही वे देवनगरी पुस्तकों का अध्ययन करने लगीं और बिस्मिल की छोटी बहनों को शिक्षा देने लगीं।

3. बिस्मिल जी की केवल एक इच्छा यह थी कि वे एक बार श्रद्धापूर्वक अपनी माताजी के चरणों की सेवा करके अपने जीवन को सफल बनाना चाहते थे तथा अपनी माँ से आर्शीवाद माँगते थे कि अंतिम समय भी हृदय किसी प्रकार से विचलित न हो और तुम्हारे चरण–कमलों को प्रणाम कर मैं परमात्मा का स्मरण करता हुआ शरीर–त्याग करूँ। इस इच्छा को पूरा करना इसलिए असंभव था क्योंकि तब–तक उन्होंने देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया था।

4. बिस्मिल जी की धार्मिक, सामाजिक तथा आत्मिक उन्नति में उनकी माता जी का प्रमुख योगदान रहा। बाल्यावस्था से ही उनकी माता जी ने उनके भीतर सत्यनिष्ठा, जीवन मात्र के प्रति दया, दृढ़ता, देश–प्रेम– जैसे गुण प्रस्फुटित कर दिए थे। जो कुछ शिक्षा उन्होंने ग्रहण की उसका श्रेय भी उनकी माता को रहा। उनकी माँ ने उन्हें कई उच्च व्यक्तित्व वाले उपदेश भी प्रदान किए। वे बिस्मिल जी को प्रत्येक बात स्नेहपूर्वक समझाती थीं। यदि कभी बिस्मिल धृष्टतापूर्ण उत्तर देते थे, तब भी उन्होंने बुरा नहीं माना और प्रेम भरे शब्दों से कहा कि तुम्हें जो अच्छा लगे, वह करो, किंतु ऐसा करना ठीक नहीं, इसका परिणाम अच्छा न होगा। महान से महान संकट में भी माँ ने अधीर नहीं होने दिया। तुमने प्रेमभरी वाणी से मुझे सांत्वना दीं। तुम्हारी दया की छाया में मैंने अपने जीवन में कोई कष्ट अनुभव न किया।

5. बिस्मिल जी की माँ उनकी मृत्यु का दुखद समाचार सुनकर धैर्य धारण करेंगी ऐसा विश्वास उन्हें इसलिए था, क्योंकि उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहते हुए अपने जीवन को भारत माता की सेवा करने में बलिदान कर दिया था। उन्होंने पत्र द्वारा माँ को धैर्य धारण करने के लिए गुरुगोविंद सिंह जी की धर्मपत्नी एवं उनके धर्म रक्षार्थ पुत्रों के बलिदान का प्रसंग लिखा होगा।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-126

(पाठ–विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा–ज्ञान)

क. 1. भारतवासी 2. आत्मनिर्भरता
3. राजकुमार

ख. समाज + इक व्यक्ति + त्व

कलंक + इत धृष्ट + ता

वर्णन + इय दीवान + ई

ग. 1. कार्य, धर्म, वर्ष, गृहकार्य, आर्य, वार्तालाप, निर्वाह, पूर्ति, अवर्णनीय, धार्मिक, मूर्ति, ऐश्वर्य, श्रद्धापूर्वक, पूर्ण, धैर्य, रक्षार्थ।

2. कांग्रेस, प्रकार, प्रोत्साहन, ग्रामीण, प्रवेश, चक्र, क्रांतिकारी, प्राण, प्रयत्न, प्रतिज्ञा, प्राणदंड, प्रत्येक, ग्रहण, श्रेय, प्रेम, प्रसन्न, प्रणाम।

घ. 1. ऋ 2. र

3. ऋ 4. र

5. र 6. ऋ

ङ. 1. प्रोत्साहन 2. सदव्यवहार

3. मेजिनी 4. अध्ययन

5. विवाह 6. जननी?

7. मनोहर

Page-127

(कौशल-परीक्षण)

1. बाल-विवाह से निम्नलिखित हानियाँ होती हैं–

- बाल-विवाह के कारण बालकों के व्यक्तित्व का विकास पर्याप्त रूप से नहीं हो पाता।
- समय से पहले ही बच्चों के ऊपर परिवार का बोझ पड़ जाता है।
- वक्त से पहले ज़िम्मेदारी आने के कारण वे उसका निर्वाह ठीक प्रकार से नहीं कर पाते।
- बाल-विवाह के कारण लड़कियों की शिक्षा जहाँ बीच में ही रुकवा दी जाती है तो वहीं लड़के भी अपना ध्यान पढ़ाई पर ठीक से नहीं लगा पाते।
- बाल-विवाह के कारण बालक अपनी सामाजिक स्थितियों को समझने में परिपक्व नहीं होते।
- लड़कियों को कम उम्र में ही बच्चों को सँभालने की ज़िम्मेदारी उठानी पड़ती है। इसके लिए वे पूरी तरह से तैयार नहीं होतीं।

2. स्त्री-शिक्षा संपूर्ण समाज को लाभान्वित करती है, यह कथन पूर्णतः सत्य है। एक पुरुष को पढ़ाने से केवल एक व्यक्ति शिक्षित होता है, किंतु एक स्त्री को शिक्षित करने से पूरा परिवार शिक्षित होता है और परिवारों को जोड़कर ही समाज का निर्माण होता है। भारत जैसे विकासशील देश को आर्थिक तथा सामाजिक रूप से विकसित बनाने में स्त्री-शिक्षा अनिवार्य है। यदि नारी ही शिक्षित नहीं होगी तो वह न तो सफल गृहिणी बन सकेगी और न ही कुशल माता। समाज में बाल-अपराध बढ़ने का कारण बालक का मानसिक रूप से विकसित न होना है। अगर एक माँ अशिक्षित होगी तो वह अपने बच्चों का सही मार्गदर्शन करके उनका मानसिक विकास कैसे कर पाएगी और एक स्वस्थ समाज का निर्माण एवं विकास संभव नहीं हो सकेगा। अतः स्त्री को पुरुष के समान ही शिक्षा का अधिकार है।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. मेरे जीवन में मेरी माँ की अहम भूमिका है। वे मुझे बहुत प्यार करती हैं और मैं भी उनसे बहुत प्यार करती हूँ। मेरी माँ मेरी हर छोटी-बड़ी ज़रूरत का ध्यान रखती हैं। माँ के बिना मेरा अस्तित्व ही संभव नहीं है। वे व्यक्तिगत लाभ के बिना ही निस्स्वार्थ भाव से परिवार के प्रत्येक सदस्य की ज़रूरत का ध्यान रखती हैं। मेरी माँ सदैव मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं तथा सही राह पर आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शन करती हैं। दुनिया को समझने तथा कोई भी कार्य आसानी से करने में वे मेरी प्रेरक हैं।

2. WZ408/502

राजा गार्डन

नई दिल्ली – 110015

प्रिय रीतिका

यहाँ सब कुशल-मंगल है और आशा करती हूँ कि वहाँ भी सब कुशल होगा। मेरी माता जी का जन्मदिन इस महीने की पंद्रह तारीख को मनाया जा रहा है। इस बार माता जी के जन्मदिन पर मैंने कुछ विशेष आयोजन करने के बारे में सोचा है तथा परिवार के हम सभी सदस्य उन्हें सरप्राइज़ पार्टी देना चाहते हैं। इस आयोजन में रात्रि-भोज का भी आयोजन है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि इस अवसर पर तुम भी अंकल और आंटी के साथ माताजी को जन्मदिवस की शुभकामनाएँ देने के लिए उपस्थित रहो। आशा करती हूँ, तुम परिवार सहित जन्मदिवस के इस शुभ अवसर पर हमारे साथ सम्मिलित होगी। अंकल-आंटी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारी मित्र

चारू

3. विद्यार्थी स्वयं करें।

15 विश्व-राज्य

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-130 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. कवि ने आग, पानी, वायु के संचार, भूमि, आकाश, सूर्य, चंद्रमा, पुरुष, मानव-जाति, प्रेम तथा देह को एक बताया है।

2. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अतः कोई भी व्यक्ति एकांत में रहकर जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। उसे अपने परिवार के सदस्यों, समाज के अन्य लोगों की आवश्यकता अपने प्रत्येक कार्य के लिए पड़ती है। इसलिए व्यक्ति अलग रहकर अधूरा है।

3. 'स्नेह लेप' से आशय है कि किसी के दुख में उससे प्रेमपूर्वक बात कर उसे उसके दुख से बाहर निकालना। ताकि वह अपने दुख को भूलकर नए जीवन का स्वागत करे।

4. विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-130-131 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. ब   2. स

3. द

ख. 1. इस पंक्ति का आशय यह है कि सभी देशों के मध्य परस्पर मैत्रीपूर्ण संबंध कायम रहने चाहिए क्योंकि विश्व संपूर्ण तभी कहलाएगा जब उसमें प्रत्येक देश की भागीदारी सुनिश्चित होगी।

2. प्रस्तुत पंक्ति से यह स्पष्ट होता है कि हम सभी अलग-अलग होने के बाद भी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। किसी एक के दुखी होने पर हम सभी स्नेह

भाव से उस व्यक्ति का दुख दूर करने का प्रयत्न करते हैं।

ग. 1. इस कविता के रचयिता का नाम मैथिलीशरण गुप्त है। इन्हें राष्ट्रकवि का सम्मान दिया गया है।

2. हम सभी आपस में मिल-जुलकर तथा साथ रहकर 'मनुज परिवार' बनाते हैं। इससे समाज बनता है और फिर राष्ट्र।

3. 'परित्राण' शब्द से अभिप्राय विपत्ति से बचने का उपाय है अर्थात विपत्ति से तभी बचा जा सकता है जब हम एक-दूसरे को समान समझते हुए आपसी सहयोग तथा मेल-जोल के साथ विश्व-राज्य कायम करें। अपने देश की सीमाओं से बाहर आकर एक-दूसरे का पूरक बन जाएँ।

4. इस कविता के माध्यम से कवि विश्व मानवता का संदेश देना चाहते हैं। संसार के समस्त प्राणी और देश भिन्न-भिन्न होने के उपरांत यदि पारस्परिक मेल-जोल एवं सहयोग से एक-दूसरे के पूरक बन जाएँ तो स्वार्थपरता व पारस्परिक कटुता का सदा के लिए अंत हो जाएगा। इस अध्याय का प्रमुख प्रयोजन मानवतावाद प्रेम, शांति, एकता, समान अधिकार का प्रसार करना है।

5. वैश्विक एकता स्थापित करने के लिए कवि ने वायु का सभी स्थानों पर समान रूप से बहना, शीतोष्ण के समान एक रस होना, एक मानव-जाति बने रहना, विश्व-राज्य में सभी का समान अधिकार होना तथा एक-दूसरे के दुख में स्नेह दिखाना जैसे उदाहरण प्रस्तुत किए हैं।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-131-132

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. अ + न् + अ + ल् + अ

2. स् + ओ + म् + अ

3. म् + अ + न् + उ + ज् + अ

4. द् + ए + ह् + अ

ख. 1. गुण – रस्सी, स्वभाव

2. तप – साधना, अग्नि, धूप

3. प्रकृति – कुदरत, स्वभाव

4. रस – आनंद, फलों का निचोड़

ग. 1. तत्सम – अनल, अंबर, सलिल, अनिल, देह

2. तद्भव – आग, आकाश, पानी, वायु, शरीर

घ. 1. हमारे देश में भिन्न-भिन्न स्थानों पर अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं।

2. वाक्य के शब्द एक-दूसरे पर आश्रित रहते हैं।

3. जीवन में दुख-सुख का आना लगा ही रहता है।

4. परिवार में प्रत्येक सदस्य का अलग-अलग स्वभाव होता है।

ङ. 1. संचार 2. पूरे

3. सोम 4. लोकतंत्र

5. तपना 6. संग

(कौशल-परीक्षण)

1. हाँ, एक व्यक्ति के लिए पारिवारिक प्रेम, देश-प्रेम तथा विश्व-प्रेम एक साथ संभव है। संसार के समस्त प्राणी तथा देश भले ही अलग-अलग हैं किंतु फिर भी सभी आपस में कहीं-न-कहीं एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। विश्व में कहीं भी कोई दुखद घटना घटित होती है तो समूचे विश्व को उससे पीड़ा पहुँचती है। यदि हम मानवता की श्रेष्ठता को समझेंगे तो हमारे लिए परिवार, देश तथा विश्व से प्रेम करना कठिन न होगा।
2. 'सर्व मंगलम्' के लिए मेरा सुझाव यह है कि विश्व के प्रत्येक देश को आपसी सहयोग बनाते हुए प्रेम तथा शांतिपूर्वक ढंग से अपने कार्यों का वहन करना चाहिए। स्वार्थपरता तथा पारस्परिक कटुता की भावना से दूर रहकर ही हम सभी देशों के माध्यम से वहाँ के जनमानस का अच्छा सोच सकते हैं।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. हाँ, देश काल की सीमाओं को तोड़कर पूरे संसार को एक किया जा सकता है। संसार के सभी लोग तथा देश भले ही अलग-अलग हैं, किंतु परस्पर आपसी सहयोग से वे एक-दूसरे के पूरक बन सकते हैं। इस प्रकार स्वार्थपरता तथा पारस्परिक वैमनस्य का भाव सदा के लिए खत्म हो जाएगा।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।
3. विद्यार्थी स्वयं करें।
4. विद्यार्थी स्वयं करें।

16 बेटियाँ हों तो ऐसी

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-138 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. सिलेसिया की चर्चा इतिहास में इसलिए है क्योंकि 1813 में उसने नेपोलियन का डटकर मुकाबला किया। जिसके कारण नेपोलियम की सेना को रुकना पड़ा। सिलेसिया के देशभक्त नौजवानों ने गुलाम बनने की जगह स्वयं को नष्ट कर देना बेहतर समझा लेकिन नेपोलियन की सेना को आगे बढ़ने नहीं दिया। इस युद्ध में देश के सभी नागरिकों, नौजवानों एवं बच्चों ने अपनी उम्र के अनुसार योगदान दिया।
2. लड़की हज्जाम की दुकान पर आई थी क्योंकि वह अपनी लटों को कटवाकर उससे मिले धन को अपने देश की रक्षा हेतु स्वदेश-रक्षक समिति को देना चाहती थी। वह इस प्रकार से देश की आज़ादी में अपना योगदान देना चाहती थी।
3. प्रैस्कोविया को चिंता थी कि वह किसी-न-किसी तरह से अपने माता-पिता को साइबेरिया के नारकीय जीवन से मुक्ति दिला सके।
4. प्रैस्कोविया के पिता को यह दुख था कि उनकी रिहाई के लिए जो कोशिश प्रैस्कोविया ने की थी, उसके कारण वह जिंदगी भर के

लिए अपाहिज हो गई और वे बेटी के लिए कुछ भी नहीं कर पा रहे थे।।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. × 2. × 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

ख. 1. लड़की की बेचैनी का कारण यह था कि वह भी नौजवानों की तरह अपने देश की रक्षा के लिए कुछ करना चाहती थी, किंतु फ़ौज में भर्ती हो नहीं सकती थी तथा गरीबी के कारण उसके पास पैसे भी देने के लिए नहीं थे।

2. लड़की ने अपनी देशभक्ति का परिचय अपने खूबसूरत बालों को कटवाकर तथा उससे प्राप्त धनराशि को स्वदेश-रक्षक समिति को देकर दिया।

3. लड़की के अलौकिक बलिदान से ब्रेसलाँ के लोगों में एक नया जोश भर आया। इसी जोश के कारण वे सिलेसिया की रक्षा कर सके।

4. प्रैस्कोविया ने अपने पिता की आज़ादी के लिए अपने पिता के साथ कैद एक दूसरे सज्जन से एक दस्तावेज़ लिखवाकर पेट्रोग्राद भिजवाया ताकि वह जार से भेंट कर अपने पिता की रिहाई करवा सके।

5. प्रैस्कोनिया के पिता की रिहाई जार की माता के हस्तक्षेप से हुई। जार ने उसे पाँच हज़ार रूसी सिक्के भी दिए। उसने-अपने पिता के दोनों मित्रों की भी रिहाई करवाई।

Page-139

ग. 1. पाठांश में सिलेसिया की एक छोटी-सी लड़की के अलौकिक बलिदान की बात की गई है।

2. लड़की की लटों को देशभक्ति की यादगार माना गया है।

3. मालामाल हो जाने के बाद दुकानदार ने अपनी रकम का बहुत बड़ा हिस्सा देश की उन्नति के कामों में खर्च किए जाने हेतु स्वाधीन सिलेसिया के राजकोष में अर्पित कर दिया।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. नदियाँ 2. सड़कें 3. सिक्के 4. महिलाएँ 5. बालों 6. सेनाएँ

ख. 1. गुलामी 2. भक्षक 3. बेचना 4. अवनति 5. अवज्ञा 6. अस्वस्थ

ग. 1. कीमती – गुणवाचक विशेषण

2. छोटी – गुणवाचक विशेषण

3. सुनहरे, रेशमी – गुणवाचक विशेषण

4. ऊँची - नीची– गुणवाचक विशेषण

5. पाँच हज़ार – संख्यावाचक विशेषण

घ. 1. **सौदा तय करना**

दुकानदारों से मोल-तोल करना ग्राहकों को बखूबी आता है।

2. **दया आना**

रास्ते में कुत्ते के बीमार बच्चे को देखकर मेरा दिल पसीज गया।

3. **अठखेलियाँ करना**

आजकल के बच्चों को दिल्लगी करना खूब आता है।

4. **बदनाम होना**

बिना बात के किसी पर कालिख मत पोतना।

Page-140 (कौशल-परीक्षण)

1. हाँ, भारतवासियों ने भी अंग्रेजों से मुक्ति पाने के लिए 'अंग्रेज़ों भारत छोड़ो' जैसे नारे का पालन किया। सभी भारतवासियों के सहयोग से ही भारत आज स्वाधीन है। यह एक जनआंदोलन था, जिसने भारत देश को अंग्रेज़ों की गुलामी से आज़ाद कराया।

2. प्रत्येक संतान के अपने माता-पिता के प्रति कुछ दायित्व होते हैं, जिनका पालन उन्हें करना चाहिए। माता-पिता के खान-पान का हमें उचित रूप से ध्यान रखना चाहिए। उनके सोते समय हमें उनकी चरण-सेवा करनी चाहिए। उनका आदर तथा सम्मान करना हमारा प्रमुख दायित्व है। उनकी प्रत्येक आवश्यकता का हमें ध्यान रखना चाहिए। हमें उनके साथ समय व्यतीत करना चाहिए तथा उनकी परेशानियाँ पूछकर उन्हें हल करना चाहिए। हमारे माता-पिता हमारे लिए आदरणीय होते हैं। उन्होंने हमें जन्म दिया है तथा हमारा पालन-पोषण किया है अत: हमारा भी यह दायित्व बन जाता है कि हम उनके सुख-दुख का ध्यान रखें तथा उनकी सेवा करें। अत: हमें उनके प्रत्येक कार्य में सहायता करनी चाहिए।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. **देश-प्रेम**

देश-प्रेम का अर्थ है– देश के प्रति अपनापन। व्यक्ति जिस देश में रहता है तथा जन्म लेता है, उसके प्रति लगाव होना स्वाभाविक है। सच्चा देश-प्रेमी अपने देश के लिए अपना तन-मन अर्पित कर देता है। देश के लिए न्योछावर होने से बढ़कर और कोई गौरव नहीं। भारत में शिवाजी, महाराणा प्रताप, रानी लक्ष्मीबाई, सरोजिनी नायडू, आज़ाद, सुभाष जैसे देशभक्त हुए हैं। देश-प्रेम की भावना धन-दौलत, समृद्धि, सुख-वैभव आदि सबसे ऊपर है। एक देश-प्रेमी शत्रु से अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता को बचाने के लिए अपने जीवन का त्याग करने के लिए सदैव तत्पर रहता है। वह अपने निजी हित या लाभ की परवाह नहीं करता। देश-प्रेम की भावना इनसान के हृदय को देशभक्ति से ओत-प्रोत रखती है। देशभक्ति के उदाहरण केवल शहीद ही नहीं हैं, अपितु देश का नाम सारे विश्व में रोशन करने वाले वैज्ञानिक, खिलाड़ी, कवि एवं साहित्यकार आदि भी हैं। ऐसे समाज-सुधारकों, कलाकारों और समाज-सेवकों के कार्यों से इतिहास भरा पड़ा है, जिन्होंने देश की उन्नति के लिए अपना समस्त जीवन लगा दिया। हम सबका परम कर्तव्य है कि अपने देश और देशवासियों की भलाई के विषय में चिंतन करें, अपने देश की समस्याओं जैसे-भ्रष्टाचार, गरीबी तथा बेरोजगारी आदि को समाप्त करने का प्रयास करें और देश के विरुद्ध कार्य करने वाली शक्तियों का नाश करें।

3. विद्यार्थी स्वयं करें।

वार्षिक परीक्षा प्रश्न-पत्र

खंड 'अ'

Page-142

क. 1. फ़ोटो खिंचवाते समय प्रेमचंद के सिर पर किसी मोटे कपड़े की टोपी थी। उन्होंने कुरता और धोती पहना था। उनकी कनपटी चिपकी थी। गालों की हड्डियाँ उभर आई थीं। घनी मूँछें चेहरे को भरा-भरा बतलाती थीं।

2. तसवीर में प्रेमचंद जी ने पाँवों में कैनवस के जूते पहने हुए थे।

3. प्रेमचंद जी की तसवीर में लेखक की दृष्टि जूते पर अटक गई, क्योंकि प्रेमचंद का दाहिने पाँव का जूता ठीक था मगर बाएँ जूते में बड़ा छेद हो गया था जिसमें से अँगुली बाहर निकल आई थी।

4. प्रेमचंद जी की फ़ोटो देखकर लेखक सोचने लगा कि फ़ोटो खिंचाने की अगर यह पोशाक थी, तो पहनने की कैसी होगी? नहीं! इस आदमी की अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी। इसमें पोशाकें बदलने का गुण नहीं था यह जैसा है, वैसा ही फ़ोटो में खिंच जाता था।

5. लेखक का साहित्यिक पुरखा मुंशी प्रेमचंद है।

ख. 1. वीर का सम्मान रण में बलि होने से बढ़ जाता है, क्योंकि वह देश की रक्षा के लिए कार्य करता है।

2. सोने से भी अधिक मूल्यवती वीर का देश के लिए बलि होना है।

3. इस पद्यांश में रानी झांसी की बात हो रही है।

4. रानी से भी अधिक प्रिय अपने राज्य एवं देश की आज़ादी है। रानी ने देश की आज़ादी के लिए अंग्रेज़ों के साथ संघर्ष किया था। अतः हमें भी देश की मान-प्रतिष्ठा के लिए कार्य करने चाहिए।

खंड 'ब'

ग. 1. वंश – कुल, बाँस, जाति

2. आम – फल, साधारण

3. अंबर – आकाश, वस्त्र, एक सुगंधित पदार्थ

Page-143

घ. 1. शिशु – बच्चा, बालक, लड़का

2. हाथ – कर, पाणि, हस्त

3. दूध – गोरस, दुग्ध, क्षीर, पेय

ङ. 1. रक्षक – भक्षक

2. उन्नति – अवनति

च. 1. सड़क – पुल्लिंग

2. बाँस – पुल्लिंग

छ. 1. कौआ – कौए

2. मिठाई – मिठाइयाँ

ज. 1. अठन्नी लेकर उसने झोली <u>में</u> रख ली। **अधिकरण कारक**

2. <u>मैं</u> कलकत्ता छोड़कर कभी नहीं गया। **कर्ता कारक**

3. मिनी <u>की</u> माँ बड़े शंकालु स्वभाव की थी। **संबंध कारक**

झ. 1. नींद – निंद्रा

2. हाथ – हस्त

ञ. 1. इतिहास – ऐतिहासिक

2. ईश्वर – ईश्वरीय

ट. 1. अरथ – अर्थ

2. परभाव – प्रभाव

3. करम – कर्म

ठ. 'अप' उपसर्ग से बनने वाले तीन शब्द–

1. अपयश, 2. अपमान, 3. अपशब्द

ड. 1. **राष्ट्र–** र् + आ + ष् + ट् + र् + अ

2. **भौतिक–** भ् + औ + त् + इ + क् + अ

ढ. 1. मोल-तोल करना– सौदा तय करना

रीमा किसी भी वस्तु का मोल-तोल करने में माहिर है।

2. दिल्लगी करना– हँसी-मज़ाक करना

व्यक्ति को अवसर के अनुकूल ही दिल्लगी करनी चाहिए।

3. कालिख पुतना– कलंक लगना या कलंकित होना

रामदीन के पुत्र के गलत कर्मों के कारण परिवार के सदस्यों पर कालिख पुत गई।

खंड 'स'

ण. 1. प्रैस्कोविया के पिता को साइबेरिया में वनवास की सज़ा मिली थी।

2. प्रैस्कोविया के माता-पिता को अपनी पुत्री की चिंता थी, जो दिनोंदिन बड़ी जा रही थी। वे उसके भविष्य के लिए कुछ भी करने में असमर्थ थे।

3. प्रैस्कोविया की चिंता अपने माता-पिता को लेकर थी। वह किसी भी तरह से अपने पिता को इस नारकीय जीवन से मुक्ति दिलाना चाहती थी।

4. लड़की के दिमाग में विचार आया कि वह जार से कहकर अपने पिता को छुड़ाने की कोशिश करे।

Page-144

त. 1. कविता में माँ को संबोधित किया गया है।

2. उपर्युक्त पंक्तियों में माँ से शिकायत दर्शाया गया है।

3. इस कविता में बिटिया छोटी रहकर अपनी माँ के साथ रहना चाहती है, जिससे वह सदैव माँ का प्यार-दुलार पा सके। बड़ी बनकर वह माँ का प्यार खोना नहीं चाहती। इसलिए इस कविता में 'ऐसी बड़ी न होऊँ मैं' की कामना की गई है।

4. इस कविता के रचयिता सुमित्रानंदन पंत हैं।

थ. 1. 'विश्व-राज्य' कविता द्वारा कवि विश्व मानवता का संदेश देना चाहते हैं। संसार के समस्त प्राणी और देश भिन्न-भिन्न होने के उपरांत यदि पारस्परिक मेल-जोल एवं सहयोग से एक-दूसरे के पूरक बन जाएँ, तो स्वार्थपरता व पारस्परिक कटुता का सदा के लिए अंत हो जाएगा।

2. लड़की के आलौकिक बलिदान से ब्रेसला के लोगों में एक नया जोश भर आया। इसी जोश के कारण वे सिलेसिया की रक्षा कर सके।

3. बिस्मिल ने वकालत नामे पर हस्ताक्षर इस कारण से नहीं किए क्योंकि वह धर्मविरुद्ध था। वह इस प्रकार का पाप नहीं करना चाहते थे।

4. प्रैस्कोविया ने अपने पिता को आज़ादी दिलाने के लिए अपने पिता के साथ कैद एक-दूसरे सज्जन से एक दस्तावेज लिखवाकर प्रेट्रोग्राद भिजवाया ताकि वह जार से भेंटकर अपने पिता की रिहाई करवा सके।

5. लेखक निस्स्वार्थ की भावना से हमेशा सबकी मदद करने को तैयार रहते थे।

द. 1. इस पंक्ति में कृष्ण माँ यशोदा से

कहते हैं कि माँ! तुम कच्चा दूध बार-बार पीने को देती हो, लेकिन माखन-रोटी खाने को नहीं देती हो।

ध. 1. पूर्ण रक्षा

2. इच्छारहित

3. अद्‌भुत, जो लोक में न मिलता हो।

न. 1. प्रैस्कोविया के माता-पिता की चिंता अपनी बेटी के भविष्य को लेकर थी क्योंकि वे अपनी बेटी के लिए कुछ नहीं कर पा रहे थे।

2. महंत ने नारायण दास को पूरब दिशा में भिक्षा लेने के लिए भेजा।

3. नेपोलियन की तानाशाही से यूरोप में हड़कंप मच गया और यूरोप पराजित हो गया।

4. कोलवाल को फाँसी महंत की बुद्‌धिमानी के कारण नहीं हो पाई। क्योंकि स्वर्ग के बारे में उसने राजा, मंत्री, कोतवाल को बताया था।

5. हम सभी आपस में मिल-जुलकर तथा साथ में रहकर मनुज परिवार बनाते हैं।

खंड 'द'

प. विद्‌यार्थी स्वयं करें।

फ. विद्‌यार्थी स्वयं करें।